वर्ष 24 | अंक 11 | जून, 2023

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

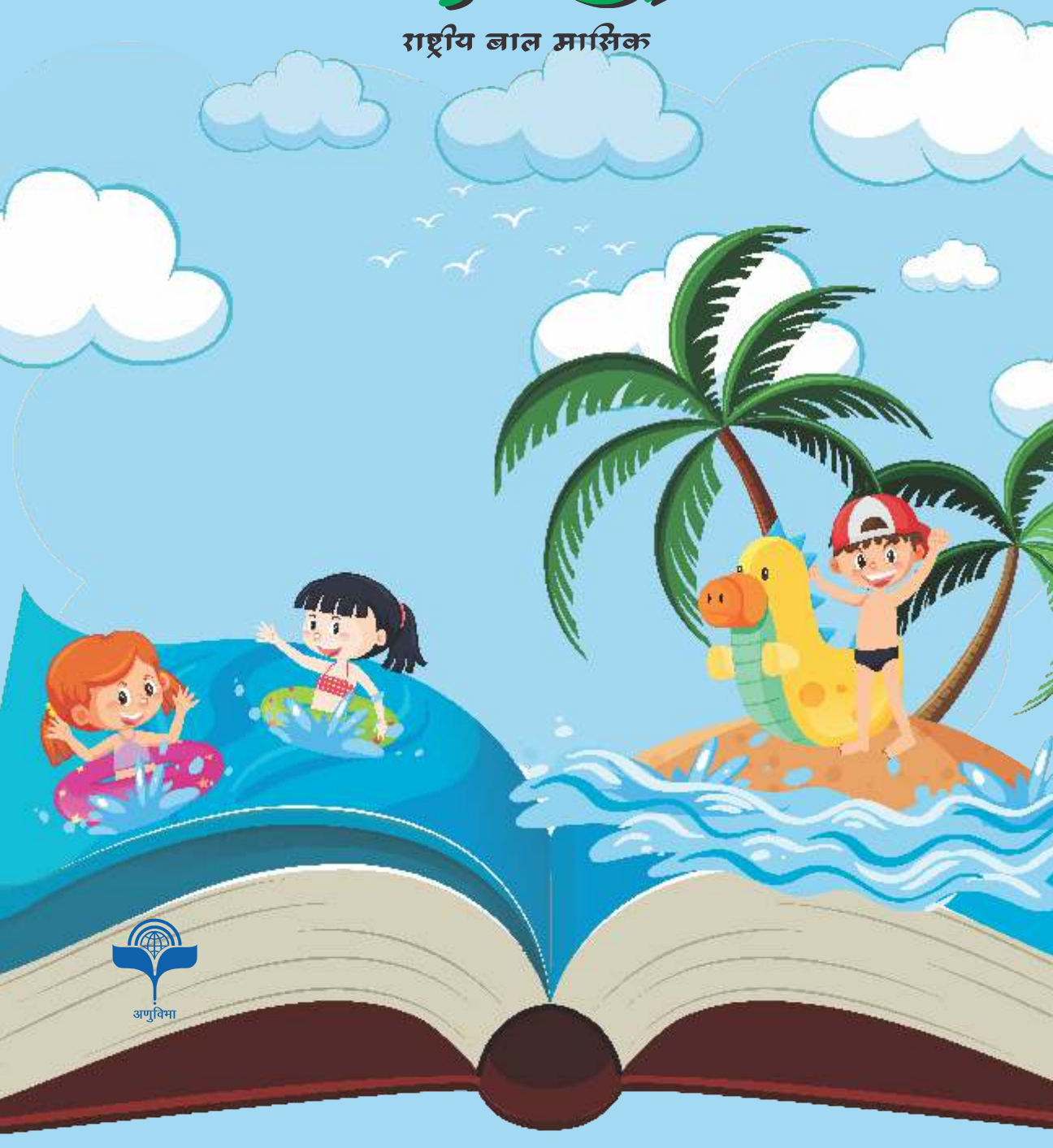

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

भारत निर्वाचन आयोग

- भारत निर्वाचन आयोग की स्थापना 25 जनवरी 1950 को हुई थी। भारत में विभिन्न स्तर पर स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष रूप से चुनाव की प्रक्रिया संचालित करने के लिए इस आयोग का गठन किया गया था। चुनाव आयोग पर ही राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, लोकसभा और राज्य विधानसभाओं आदि के चुनाव कराने की जिम्मेदारी होती है।
- चुनाव आयोग निर्वाचक नामावली तैयार करवाता है जिसमें उन नागरिकों का विवरण होता है जो अपना मतदान कर सकता है। जिस व्यक्ति का नाम इस सूची में नहीं होता वह मतदान में भाग नहीं ले सकता। यह व्यवस्था चुनाव में फर्जी या गलत वोट डालने जैसी गड़बड़ी रोकने में सहायता करती है।
- कुछ वर्षों पहले तक चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों के नाम की एक पर्ची दी जाती थी जिस पर मतदाता अपनी पसन्द के उम्मीदवार के नाम के सामने मुहर लगाकर पर्ची को सील बन्द मतदान पेटी में डाल देता था। इस व्यवस्था में मतदान अधिकारी से मिलीभगत कर या धमकाकर चुनाव में गड़बड़ी की सम्भावना अधिक रहती थी।
- वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) के माध्यम से मतदान किया जाता है। 1982 में केरल में इसका सबसे पहले उपयोग किया गया लेकिन 1998 से इसका नियमित उपयोग शुरू हो सका। 2004 के लोकसभा चुनावों में पूरे देश में इन मशीनों का उपयोग किया गया।
- 2013 से EVM के साथ VVPAT (Voter Verifiable Paper Audit Trail) का नया प्रयोग प्रारम्भ हुआ। इस मशीन से निकलने वाली पर्ची मतदाता को उसके वोट के सही डलने का विश्वास देती है।

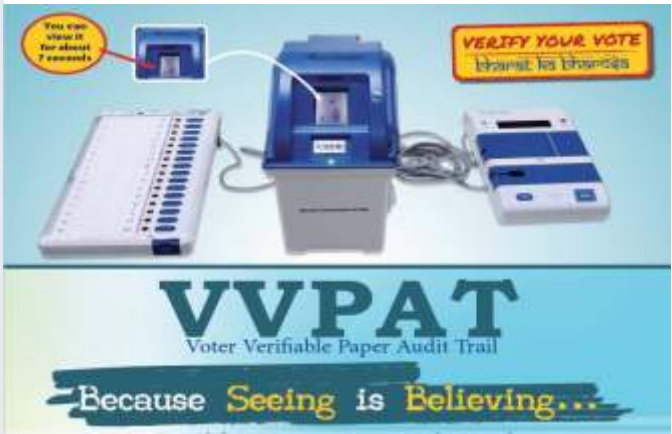

कहाँ क्या?

आलेख

सत्येन्द्रनाथ टैगोर	: डॉ. विमला भंडारी	– 11
खूबसूरत वन प्राणी – पांडा	: कमल सोगानी	– 22
विश्व संगीत दिवस	: डॉ. पामिल मोदी	– 26
बूँद–बूँद से भरता घड़ा	: उषा सोमानी	– 28
मेरा देश : गाँव विशेष	: शिखर चन्द जैन	– 34
जूड़ो	: अनिल जायसवाल	– 38

कहानी

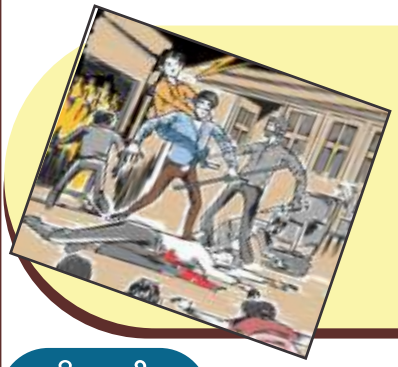

पकड़ लिया डाकू	:	रजनीकान्त शुक्ल	– 07
जीत का सेहरा	:	मीरा जैन	– 09
सबक	:	राजेश मेहरा	– 15
सोच को बदलो	:	कुसुम अग्रवाल	– 19
वनराज की भूल	:	अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'	– 23
संयोग से मिली सफलता	:	संदीप पांडे	– 31
गधेलु ने किया धूप से ...	:	राजीव तांबे, डॉ. विशाखा	– 35
मिनी का खजाना	:	वन्दना गुप्ता	– 39

कविता-गीत

कूप नगर के राजा	: श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'	– 06
मस्ती ही मस्ती	: डॉ. कविता विकास	– 10
गर्म हवाएँ	: रमेशचन्द्र पंत	– 10
गरमी के मौसम में...	: राजा भइया गुप्ता 'राजाभ'	– 10
पॉलीथिन की थैलियाँ	: पूर्णिमा मित्रा	– 13
नकटू बन्दर	: राजेंद्र निशेश	– 16
दादा जी का वादा	: उदय मेघवाल 'उदय'	– 18
प्यारा खरगोश	: पूरन सरमा	– 18
बेटी राजदुलारी	: सन्तोष कुमार सिंह	– 18
दोस्ती	: दिविक रमेश	– 30
याराना	: विजय कनौजिया	– 40

विविधा

रंग भरो	: चाँद मोहम्मद घोसी	– 13	बूझो तो जानें	: इन्द्रजीत कौशिक	– 33
विस्मयकारी भारत	: रवि लायटू	– 14	भारत के राज्य पक्षी	: डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी	– 47
वर्ग पहेली	: राधा पालीवाल	– 17	चित्र कथा	: संकेत गोस्वामी	– 48
दिमागी कसरत	: प्रकाश तातेड़	– 32			

रत्नश्री

सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो,–29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये– 30, सुडोकू–32, व्हाट्सएप कहानी– 33, आओ पढ़ें : नई किताबें – 37, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार– 44, जन्मदिन की बधाई – 46, किड्स कॉर्नर– 49, अणुविभा के आयाम – 51

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 24 अंक : 11 जून, 2023

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452 | सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651 | प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका पंचशील जैन

कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा चित्रांकन | सुशील कुमार, दीपिका

अध्यक्ष | अविनाश नाहर महामन्त्री | भीखम सुराणा कोषाध्यक्ष | राकेश बरड़िया

प्रकाशन मन्त्री | देवेन्द्र डागलिया संयोजक, पत्रिका प्रसार | सुरेन्द्र नाहटा

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

त्रैवार्षिक : 900 रु.
पंचवार्षिक : 1500 रु.
दस वर्ष : 3000 रु.
पंद्रह वर्ष : 7500 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित

ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

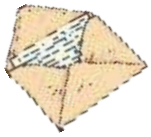

प्यारे बच्चो,

प्रवेश अब नवीं कक्षा में आ जाएगा। पढ़ाई के साथ-साथ स्कूल में होने वाली दूसरी गतिविधियों में भी वह उत्साह के साथ भाग लेता है। वाद-विवाद प्रतियोगिता उसकी पसन्दीदा प्रतियोगिता है। स्टेज पर खड़े होकर जब वह भाषण देता है तो सब दंग रह जाते हैं। तालियों से हॉल गूँज उठता है। बोलने का उसका तरीका और हाव-भाव तो आकर्षक होते ही हैं, विषय पर भी वह पूरी तैयारी कर के आता है।

स्कूल की छुट्टियाँ शुरू हो गई थी। रविवार का दिन था इसलिए सुबह के खाने पर दादा, दादी, पापा, मम्मी और छोटी बहन, सब एक साथ बैठे थे। प्रवेश भी सबके साथ बातों का मजा ले रहा था। तभी पापा गम्भीर होकर बोले – ''भई प्रवेश, अब आगे बोर्ड की पढ़ाई आ रही है। भाषण-वाषण सब बन्द, अब बस पढ़ाई पर फोकस करो।''

प्रवेश को अचानक झटका सा लगा। सोचने लगा। पापा उसके सबसे प्रिय शौक को बन्द करने के लिए कह रहे थे। हॉल में पसरे सन्नाटे को तोड़ते हुए प्रवेश बोला – ''पापा, मैं कोई ऐसा कोर्स ले लूँ जिसमें पढ़ना, सीखना और बोलना ही सिखाया जाता हो।'' पापा खिलखिला कर हँस पड़े। उन्हें लगा था कि प्रवेश मजाक कर रहा है। लेकिन प्रवेश गम्भीर था। वह वही रास्ता चुनना चाहता था जिसमें उसकी रुचि हो और जिसमें उसे महारत हासिल हो।

यह देख पापा के ललाट पर चिन्ता की लकीरें उभर आईं। चेहरे पर गुस्सा भी साफ झलक रहा था। उनकी इच्छा थी कि प्रवेश इंजीनियरिंग की पढ़ाई करे, हालाँकि मम्मी उसे आईपीएस देखना चाहती थी। स्थिति को गम्भीर होते देख दादा बोले – ''बेटा, प्रवेश की इच्छा है तो हमें इस पर विचार अवश्य करना चाहिए। आजकल तो बहुत कोर्स होते हैं। सामाजिक कार्य के लिए, शिक्षक प्रोफेसर या मोटिवेटर बनने के लिए और मैंने तो सुना है कि राजनेता बनने के लिए भी कोर्स होते हैं।''

दादा की बात सुन कर प्रवेश चहक उठा – ''हाँ, हाँ, मुझे राजनेता ही बनना है। मुझे राजनीति में जाना है।''

उस दिन पापा कुछ नहीं बोले। बाद में दादा ने उन्हें समझाया था – ''बच्चों की इच्छा के विपरीत दबाव में निर्णय लेना अच्छा नहीं होता। प्रवेश को सोचने का मौका दो, समझने की आजादी दो। हमें बस यह चिन्ता रखनी चाहिए कि वह एक अच्छा इनसान बने, अच्छी आदतें सीखे और सोच-समझ कर निर्णय लेने का सामर्थ्य उसमें आए।''

बच्चो, क्या आप कल्पना कर सकते हो कि प्रवेश बड़ा होकर क्या बना होगा? क्या परिस्थितियाँ उसके सामने आई होगी? अपने विचार आप हमें लिख कर भेज सकेंगे, तो मुझे बहुत खुशी होगी।

आपका ही,
संचय

प्रश्न एकः उत्तर दो

एक गुरु के दो शिष्य थे। वे उनकी परीक्षा करना चाहते थे। एक शिष्य को बुलाकर उन्होंने पूछा– ''बताओ, तुम्हें जगत् कैसा लग रहा है?'' उसने कहा– ''बहुत बुरा है यह जगत्। सर्वत्र अंधकार ही अंधकार है। आप देखें, दिन एक होता है और रातें दो। एक बार उजाला, दो बार अँधेरा। यह है जगत्।''

आचार्य ने दूसरे शिष्य से भी यही प्रश्न पूछा। उसने कहा– ''गुरुदेव! जगत् अच्छा है। प्रकाश ही प्रकाश है। रात बीती, उजाला हुआ। सर्वत्र प्रकाश फैल गया। प्रकाश आता है तो अंधकार चूर–चूर हो जाता है। कितना सुन्दर और लुभावना है यह जगत् कि जिसमें ऐसा प्रकाश है। मैंने देखा– दिन आया। बीता। रात आयी। बीती। फिर दिन आ गया। इस प्रकार दो दिनों के बीच एक रात। प्रकाश अधिक और अंधकार कम। दो बार उजाला, एक बार अँधेरा।''

प्रश्न एक था और उत्तर देने वाले दो थे। रात दोनों के लिए समान थी दिन दोनों के लिए समान था। केवल दृष्टिकोण का अन्तर था।

कथाबोध – संसार में प्रकाश व अंधकार दोनों हैं। यह देखने वाले की दृष्टि पर निर्भर है कि वह किसे देखता है, किसे महत्त्व देता है?

पद्य कथा

कूप नगर के राजा

मेढक जी ने जब यह देखा
मौसम हुआ सुहाना।
उनके मुख से फूट पड़ा फिर
मधुरिम एक तराना।

नीलगगन था स्वच्छ शान्तिमय
बरस चुका था पानी।
मेढक बोले कहाँ छुपी हो
कूप नगर की रानी।

फुदक मेढकी बोली मेरे
कूप नगर के राजा।
काम बताओ क्यों कहते हो
पास जरा सा आजा।

सुनो मेढकी! ऐसा मौसम
देख बहुत हर्षाया।
सच कहता हूँ टर्राने का
मेरा मन हो आया ।

मन्द–मन्द मुस्काकर बोली
ताल नगर शहजादी ।
पूरी मस्ती से टर्राओ
है पूरी आजादी।

मैं सदैव की भाँति तुम्हारा
साथ आज भी दूँगी।
नई–नई मैं हरी ओढ़नी
इतराकर ओढूँगी।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
लहार, भिण्ड (मध्य प्रदेश)

साहसी बच्चे

पकड़ लिया डाकू

असम की राजधानी गुवाहाटी में विवेक पुरकायस्थ अपनी माँ और पिता के साथ शाम का खाना खाकर सोया। उस घर में उस समय सिर्फ तीन लोग ही थे। विवेक दूसरे कमरे में लेटा हुआ था। गर्मी के मौसम में गहरी नींद में सोए विवेक की आँख अचानक एक शोर को सुनकर खुल गई। उस समय रात के करीब डेढ़ बजे थे। आँख खुलते ही उसके कानों में पिता के चीखने की आवाज आई थी।

हथियारों से लैस छह बदमाश लोग उसके घर में घुस आए थे। उन्होंने गहरी नींद में सोए उसके पिता को उठाकर उन्हें चारों तरफ से घेर लिया था। वे बदमाश उनसे जेवर और नकदी के बारे में पूछ रहे थे। वहीं साथ में उनकी माँ भी डरी सहमी बैठी थीं। उसके पिता जी और माँ यूँ अचानक सोते से उठे थे इसलिए उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। उनमें से एक ने विवेक की माँ के सिर पर वार कर दिया। माँ चीखती हुई गिर गई। विवेक के पिता जैसे ही अपनी पत्नी को उठाने के लिए आगे बढ़े तभी एक दूसरे बदमाश ने उनके पेट में चाकू घुसेड़ दिया तो वे दर्द से चीख पड़े। यही समय था जब इस दर्द भरी चीख को सुनकर विवेक की नींद खुल गई।

पिता की आवाज सुनकर विवेक तुरन्त बिस्तर से उठ बैठा और उसने झाँककर अपने पिताजी के कमरे में देखा तो वह हैरान रह गया। छह हथियार बन्द बदमाश उसके पिता और माँ को घेरे खड़े हैं। माँ नीचे गिरी हुईं हैं और एक बदमाश पिता जी के पेट में चाकू मार चुका था। पिता दर्द से चीख रहे थे। विवेक को बहुत जोर का गुस्सा आ गया। वह माँ और पिता जी को संकट में देखकर बिना किसी बात की परवाह किए दौड़ पड़ा।

विवेक ने दौड़ते हुए जाकर एक बदमाश को पीछे से जा पकड़ा। जब चीखते हुए विवेक ने एक बदमाश को पकड़ा तो उन्होंने उसे एक मच्छर की तरह समझा और धमकाकर एक तरफ हो जाने को कहा। मगर विवेक ने उस व्यक्ति को नहीं छोड़ा। उन्होंने विवेक की पिटाई की, दूसरे बदमाश ने चाकू का वार भी कर दिया।

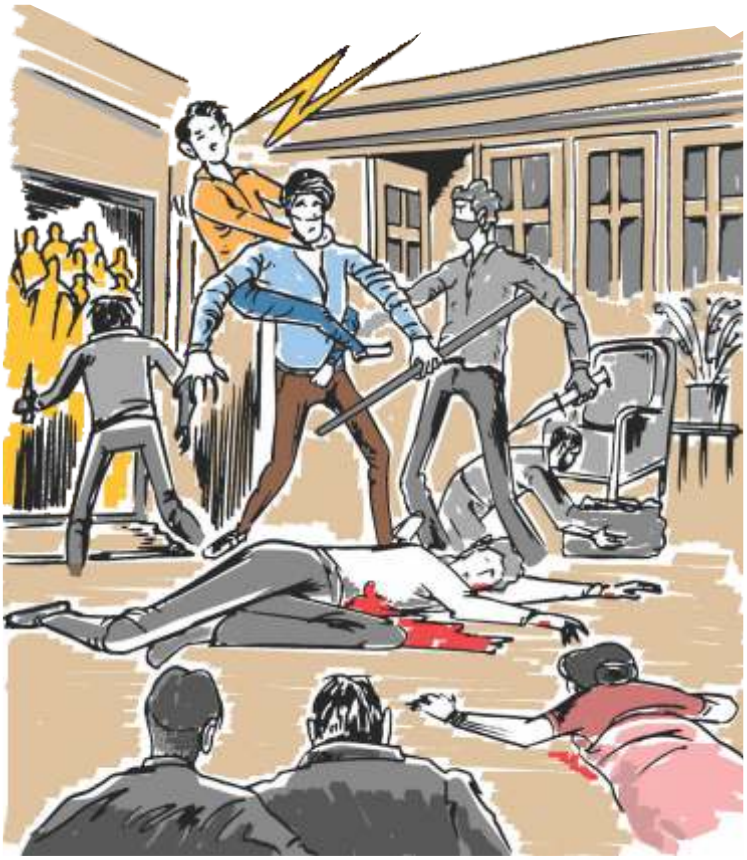

मगर विवेक ने उसे नहीं छोड़ा। उसकी पकड़ उस बदमाश पर जरा भी ढीली नहीं हुई। विवेक ने उसे मजबूरी से पकड़ रखा था और वह मदद के लिए लगातार चिल्ला भी रहा था। यह बात उन बदमाशों के लिए खतरे की घंटी जैसी थी क्योंकि रात के डेढ़ बजे के उस सन्नाटे में वे आवाजें दूर–दूर तक पहुँच रही थी।

विवेक के इस कदम ने उन्हें बैकफुट पर ला दिया। अभी तक आक्रामक रवैया उनका अब रक्षात्मक होने लगा। अभी वे कुछ और सोच पाते कि विवेक की मदद की पुकार सुनकर पड़ोस में दरवाजे खुलने और जवाब मिलने शुरू हो चुके थे।

देखें पृष्ठ 13...

द्वारा : भव्या राँका, उम्र 12 वर्ष, अहमदाबाद

मन के कार्य

जीवन विज्ञान के प्रयोग

प्रभा प्रतिदिन विद्यालय से आते ही अपनी माँ और दादी को विद्यालय में जो कुछ घटित होता है उसके बारे में बताती है। कल श्रीधर की परीक्षा है। वह एकाग्र होकर पाठ याद कर रहा है ताकि परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर दे सके। आज रमा ने कक्षा में श्रवणकुमार को कहानी सुनाई जो रात में उसकी दादी जी ने सुनाई थी। कक्षा के सभी विद्यार्थियों ने रमा के लिए तालियाँ बजाई।

क्या आपने कभी सोचा कि यह सब कैसे सम्भव होता है? हम देखी, सुनी, पढ़ी और कही गई बातों को कैसे दुहरा देते हैं? ऐसा इसलिए सम्भव होता है क्योंकि आँखों द्वारा देखी तथा कानों द्वारा सुनी गई बातें हमारे मन मस्तिष्क में अंकित हो जाती हैं। इसे स्मृति या स्मरण कहते हैं। स्मृति या स्मरण रखना मन का पहला कार्य है।

किसी अच्छे गायक को गीत गाता देख आप भी गायक बनने की कल्पना करते होंगे। किसी को माउथ–ऑर्गन बजाता देखकर आपके मन में भी माउथ ऑर्गन बजाना सीखने की इच्छा जागती होगी। कल्पना करना भी मन का कार्य है। दुविधा की स्थिति में मन में खेद और शरीर में तनाव का अनुभव होता है। अपना कर्तव्य पूरा न करने की असफलता चिन्ता उत्पन्न करती है। ऐसी स्थिति में मन में चिन्तन करके 'हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं' का निर्णय लेना चाहिए। सही चिन्तन से निर्णय भी सही होता है। चिन्तन करना मन का तीसरा कार्य है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मन के तीन कार्य हैं–

(क) स्मृति– अतीत की यादें।

(ख) कल्पना– भविष्य की योजनाएँ।

(ग) चिन्तन– वर्तमान की समस्या का सही निदान

स्मृति का विकास अथवा स्मरण शक्ति में वृद्धि करने के लिए– 'ज्ञान केन्द्र प्रेक्षा' का अभ्यास करना चाहिए। तनाव मुक्ति के लिए कायोत्सर्ग का अभ्यास करना चाहिए। चिन्ता नहीं, चिन्तन करना चाहिए। केवल प्रशंसा नहीं, प्रस्तुति करनी चाहिए। व्यथा (दुःख) नहीं व्यवस्था करने पर हम सफल जीवन जी सकते हैं।

ज्ञान केन्द्र प्रेक्षा की विधि

सिर की चोटी वाले स्थान को ज्ञान केन्द्र कहते हैं। ज्ञान केन्द्र पर ध्यान एकाग्र करने की विधि 'ज्ञान केन्द्र प्रेक्षा' कहलाती है। सुखासन में बैठे। अँगूठे और तर्जनी के अगले पौरों को मिलाएँ। यह ज्ञान–मुद्रा कहलाती है। आँखें कोमलता से बन्द करें। प्रत्येक मांसपेशी और कोशिका को सुझाव दें कि वे शिथिल हो जाएँ, वे शिथिल हो रही हैं, वे शिथिल हो गई हैं। शरीर को स्थिर और हल्का बनाएँ। यह 'कायोत्सर्ग' का प्रयोग है।

कल्पना करें, चारों ओर सरसों के खेत लहलहा रहे हैं, पीले फूलों की चादर दूर–दूर तक फैली हुई है, पीले रंग के परमाणु श्वास के साथ शरीर के भीतर जा रहे हैं और 'ज्ञान केन्द्र' पर चमक रहे हैं। 'ज्ञान–तन्तु' सक्रिय हो रहे हैं। पाँच बार मन्द स्वर में उच्चारित करें– पुनः 'मेरी स्मरण–शक्ति बढ़ रही है।'

जीत का सेहरा

घटते जंगल को देख राजा शेर ने सभी जानवरों की एक सभा बुलाई और कहा कि– ''जंगल के दोनों छोर पर कुएँनुमा गहरे गड्ढे हैं जिनमें बारह मास पानी भरा होता है, मैं चाहता हूँ इसके आसपास पौधे लगाए जाये। सभी जानवरों ने एक सुर में अपनी सहमति दे दी। साथ ही शेर ने यह भी ऐलान किया कि जिस टीम के पौधे अधिक व स्वस्थ होंगे, उसे पुरस्कार दिया जाएगा।

जानवरों की दो टीमें बनाई गई किन्तु भोला हाथी को लेने के लिए कोई भी टीम तैयार नहीं हुई, वजह थी– ''भोला न तो जमीन की सफाई कर सकता है, न ही गड्ढे खोद सकता है और पौधे लगाने में भी कोई मदद नहीं कर सकता है, उल्टे उसका पैर किसी पौधे पर पड़ गया तो।'' लेकिन किसी एक टीम को अनिवार्य रूप से भोला को लेना ही था। अतः शेर ने पर्ची के माध्यम से भोला को एक टीम का सदस्य बना ही दिया। समूह कप्तान ने भोला को सख्त हिदायत देते हुए कहा– ''तुम हमारे साथ भले ही रहो लेकिन हम जहाँ पौधे लगाएँगे उस स्थान पर भूल कर भी मत आना समझे।'' भोला ने 'हाँ' की मुद्रा में सिर हिला दिया।

दोनों ही टीमें जी जान से पौधे लगाने में जुट गई और देखते ही देखते दोनों और सैकड़ों पौधे लग गए। समय बीतता गया एक वर्ष पश्चात शेर दोनों तरफ के पौधों का निरीक्षण करने गया ताकि विजेता टीम की घोषणा कर सके। शेर को यह देख आश्चर्य हुआ कि दोनों टीम ने खूब मेहनत कर ढेर सारे पौधे लगाए किन्तु एक टीम के अधिकांश पौधे सूख चुके थे, वहीं दूसरी ओर के सारे पौधे हरे भरे थे, शेर ने इसका कारण जानना चाहा–

पहली टीम का जवाब आया– ''शेर राजा! दरअसल कुएँ का पानी गर्मी के कारण नीचे चला गया था, हमने बहुत प्रयास किये लेकिन सभी पौधों को पर्याप्त पानी नहीं दे पाए और वे मुरझा गये।'' वहीं दूसरी टीम के कप्तान ने खुश हो उत्साह पूर्वक कहा– ''हमारे कुएँ का पानी भी नीचे चला गया था लेकिन भोला हाथी ने इन पौधों को जीवित रखने के लिए बहुत मेहनत की यदि भोला हमारे साथ न होता तो आज हमारे पौधे भी मुरझा गए होते।''

शेर ने आश्चर्यजनक स्वर में पूछा– ''कैसे?'' ''उसने रात–दिन एक कर अपनी सूँड से पानी ला लाकर इन पौधों को सींचा है।'' आज विजेता का सेहरा टीम के साथ भोला हाथी के सिर पर ही बँधा, पूरा जंगल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

मीरा जैन
उज्जैन (मध्य प्रदेश)

मस्ती ही मस्ती

गर्मी की छुट्टी है,
किताब से कुट्टी है।
मस्ती ही मस्ती है,
नानी की बस्ती है।

ताल–तलैया नाला,
अड्डा हमने डाला।
सूर्य बना भट्टी है,
पर बन्द मुट्ठी है।

नाना ज्योंही आते,
हम छत पर छुप जाते।
हम चुपके से उठते,
उनको देख लौटते।

पेड़ों पर चढ़ जाते,
अठखेलियाँ दिखाते।
करते हल्ला–गुल्ला,
मिलकर लल्ली–लल्ला।

डॉ. कविता विकास
कोयला नगर धनबाद (झारखण्ड)

गर्म हवाएँ

चालीस डिग्री से भी ऊपर,
जा पहुँचा है पारा।

गर्म हवाएँ सभी ओर ही,
लगा रही हैं गश्त।
लू–अंधड़ के आगे सब ही,
हुए आज हैं पस्त।
घर के अन्दर कैद रहें कुछ,
और नहीं है चारा।...

कितना ही हम पी लें पानी,
किन्तु न बुझती प्यास।
सूख गई हैं बेल–लताएँ,
झुलस गई है घास।
दिन में ही सबको सूरज ने,
दिखा दिया है तारा।...

मना रहे सब यही कि आएँ,
जल्दी पंख पसार।
बूँदों की कर दें फिर बादल
रिमझिम–सी बौछार।
फिर तो नीचे आ जाएगा,
चढ़ा हुआ यह पारा।...

रमेशचंद्र पंत
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

गरमी के मौसम में...

मेरे घर के पास पेड़ पर,
चिड़ियाँ करें बसेरा।
चूँ चूँ चहक रोज उड़ जातीं,
हो जब नया सवेरा।

दाना–पानी की तलाश में,
हो न उन्हें हैरानी।
इसीलिए बरतन में रखता,
उनको दाना–पानी।

पास पेड़ के बरामदे की,
भीत बची जो खाली।
उसमें ऊँचाई पर मैंने,
पटिया एक लगा ली।

काकुन और बाजरा उसमें,
मैं चुगने को रखता।
चुगते हुए चहकते हैं जब,
मुझको अच्छा लगता।

गरमी के मौसम में चिड़ियाँ,
झेलें ना लाचारी।
इसीलिए है उनकी चिन्ता,
मेरी जिम्मेदारी।

राजा भइया गुप्ता 'राजाभ'
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

बालक बना महान

देश के पहले आईएएस अधिकारी

सत्येन्द्रनाथ टैगोर

'मैं भारतीय हूँ' सोचकर मेरा मन गर्वित हो उठता है। सोचिए, सत्येन्द्रनाथ टैगोर को देश का पहला आईएएस अधिकारी बनने पर खुद के भारतीय होने पर कितना गर्व महसूस हुआ होगा? खासतौर से उस कालखंड में जब भारत में ब्रिटिश शासन था। कोई अँग्रेज ही तब आईएएस अधिकारी बन सकता था। देश पर अँग्रेजों का शासन था और नियम भी उन्हीं के बनाए हुए थे। तब कैसे, किसी भारतीय का आईएएस बनना सम्भव हुआ होगा? आइए, सत्येन्द्रनाथ के 'प्रथम आईएएस अधिकारी' बनने की कहानी जाने–

जब अँग्रेज सरकार ने साल 1832 में भारतीयों के लिए मुंसिफ और सदर अमीन जैसे पद बनाए। फिर इन पदों पर भारतीयों को नियुक्त किया जाना शुरू किया। (इससे पहले केवल अँग्रेजों का ही चयन होता था।) साल 1833 में डिप्टी मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलेक्टर की पोस्ट पर भी भारतीयों को चयन करने की इजाजत दे दी गई। यह भी जान लीजिए कि इन अधिकारियों का काम टैक्स वसूली करना था।

इंडियन सिविल सर्विसेज एक्ट 1861 के तहत भारतीय सिविल सेवा का गठन किया गया, पर ईस्ट इंडिया कम्पनी की इस परीक्षा चयन प्रक्रिया को लेकर कई तरह के सवाल उठने लगे। अँग्रेजों ने दुनिया को दिखाने के लिए 'इंडियन सर्विसेज कमीशन' का गठन कर तो दिया था, लेकिन वे बिलकुल नहीं चाहते थे कि 'कोई भारतीय आईएएस की परीक्षा को पास कर सके', इस मंशा के चलते उन्होंने परीक्षा देने और ट्रेनिंग करने का केन्द्र स्थल लंदन को बना रखा था। लंदन जाकर परीक्षा देना, किसी गरीब भारतीय के लिए बस की बात न थी। एक दशक तक कोई भी भारतीय परीक्षा को पास नहीं कर सका। 'भारतीयों के लिए यह परीक्षा मुश्किल हो जाए', इसके लिए उन्होंने दूसरी चालाकी यह कर रखी थी कि परीक्षा के सिलेबस में यूरोपीय क्लासिक के लिए ज्यादा नम्बर रखे हुए थे।

अँग्रेजों की इन सब चालाकियों के बावजूद सत्येन्द्रनाथ टैगोर ने वर्ष 1863 में लंदन जाकर इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा पास कर ली। लंदन में ही उसकी ट्रेनिंग पूरी कर वर्ष 1864 में वे भारत लौट आए और उन्हें भारत का पहला आईएएस अधिकारी बनने का गौरव मिला।

प्रशासनिक अधिकारी का कार्य क्षेत्र

उनकी पहली नियुक्ति बॉम्बे प्रेसिडेंसी में हुई। जिसकी परिधि में तब महाराष्ट्र, गुजरात और सिंध के पश्चिमी क्षेत्र आता था। बॉम्बे (अब मुम्बई) में चार महीने की प्रारम्भिक पोस्टिंग के बाद, उनकी अहमदाबाद में पहली सक्रिय पोस्टिंग हुई। वर्ष 1882 में उनकी नियुक्ति कारवार, कर्नाटक में जिला न्यायाधीश के रूप में हुई। 1897 में महाराष्ट्र के सतारा के न्यायाधीश के रूप में सेवानिवृत्त हुए। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 1832 से पहले तक सभी प्रशासकीय पदों पर अँग्रेज अधिकारी ही नियुक्त किए जाते थे। भारतीयों को पदोन्नति बहुत ही कम दी जाती थी। इस कारण उन्हें अवकाश प्राप्ति तक सिर्फ जिला और सेशन जज के पद तक ही पदोन्नति मिल सकी। वे सिविल सर्विसेज़ में करीब 30 साल तक रहे।

विलक्षण प्रतिभा के धनी

वे भारत के पहले आईएएस अधिकारी होने के अलावा मशहूर लेखक, कवि, साहित्यकार, संगीतकार और समाज सुधारक के तौर पर भी जाने जाते रहे। विश्वविख्यात कवि रवींद्रनाथ टैगोर के वे बड़े भाई थे। सत्येन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 01 जून 1842 को कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर और माता शारदा देवी थीं। उन्होंने घर पर ही संस्कृत और अँग्रेजी सीखी। इसके बाद उन्होंने कोलकाता के 'प्रेसिडेंसी कॉलेज' में प्रवेश ले लिया। वे वर्ष 1857 में कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षाओं में उपस्थित होने वाले छात्रों के पहले बैच का हिस्सा थे।

सन् 1859 में सत्येन्द्रनाथ का विवाह ज्ञानंदिनी देवी से हुआ था। उनके एक पुत्र व एक पुत्री का जन्म हुआ। बेटा सुरेन्द्रनाथ टैगोर बंगाली लेखक, साहित्यिक विद्वान और अनुवादक थे, जिन्हें रवीन्द्रनाथ टैगोर की कई रचनाओं का अँग्रेजी में अनुवाद करने के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। उनकी बेटी इंदिरादेवी चौधुरानी भी साहित्यकार, लेखिका और संगीतकार थीं।

कई शहरों में पोस्टिंग के साथ, उन्होंने देश भर में यात्रा की। लम्बे समय तक घर से दूर रहने के कारण, उनके परिवार के सदस्य उनसे मिलने गए और लम्बे समय तक उनके साथ रहे। उनके नियमित आगन्तुकों में उनके छोटे भाई ज्योतिन्द्रनाथ और रवीन्द्रनाथ और उनकी बहन स्वर्णकुमारी देवी थीं। बंगाल के बाहर उनकी पोस्टिंग होने से उन्हें कई भारतीय भाषाओं को सीखने का अवसर मिला।

साहित्य में योगदान

उन्होंने बांग्ला और इंग्लिश में कई किताबें लिखीं। उन्होंने कई किताबों का संस्कृत से बांग्ला में अनुवाद किया। उन्होंने मशहूर क्रांतिकारी बाल गंगाधर की 'गीता रहस्य' और तुकाराम की 'अभंग' कविताओं का बंगाली में अनुवाद किया। सेवानिवृत्ति के बाद सत्येन्द्रनाथ टैगोर कलकत्ता लौट आए और साहित्य लेखन में लग गये। उनके द्वारा लिखी गई कुछ पुस्तकें इस प्रकार हैं– सुशीला ओ बिरसिंघा (नाटक, 1867), बॉम्बे चित्रा (1888), नबरत्नमाला, स्ट्रिसवधिनता, बूद्धधर्म (1901), अमर बाल्यकथा ओ बॉम्बे प्रभास (1915), भारतवर्षीय इंग्रेज (1908), राजा राममोहन राय। उनके घर करीबी रिश्तेदारों व कलकत्ता के प्रतिष्ठित लोगों का आना–जाना लगा रहता था। साहित्य जगत की हस्तियाँ वहाँ पहुँचती थी और घर में आपसी संवाद और विचार विमर्श के अलावा साहित्यिक गोष्ठियाँ भी होती थी।

महिलाओं की आज़ादी में रहे अग्रणी

सत्येन्द्रनाथ ने 'महिलाओं की आजादी' में अहम भूमिका निभाई। वे अपनी पत्नी ज्ञानंदिनीदेवी को अपने साथ इंग्लैंड ले जाना चाहते थे लेकिन उनके पिता देबेंद्रनाथ ने इसकी अनुमति नहीं दी। बाद में जब वह मुम्बई में थे तो अन्य ब्रिटिश अधिकारियों की पत्नी की तरह उन्होंने अपनी पत्नी को अपने साथ रखा। जब वे कलकत्ता वापस आए तो अपनी पत्नी को गवर्नमेंट हाउस में आयोजित एक पार्टी में साथ ले गए। ऐसा पहली बार हुआ कि कोई बंगाली महिला किसी खुले स्थान पर दिखाई दी हो। शुरूआत में लोग उनका मजाक उड़ाते लेकिन पर्दा प्रथा को खत्म करने की दिशा में यह पहला कदम था। साल 1877 में उन्होंने साहसिक कदम उठाते हुए अपनी पत्नी ज्ञानंदिनी और बच्चे को इंग्लैंड भेज दिया। रवीन्द्रनाथ वहाँ उनसे मिलने गए और बाद में एकसाथ भारत लौट आए।

ब्रह्म समाज से जुड़ाव

सत्येन्द्रनाथ टैगोर 'ब्रह्म समाज' के सदस्य थे। उन्होंने जीवन भर ब्रह्म समाज का प्रचार किया। सन 1876 में उन्होंने पश्चिम बंगाल के बेलगछिया में हिन्दी मेला का आयोजन करने में अहम भूमिका निभाई और इसके लिए गीत लिखे। इसके बाद सन 1907 में वे 'आदि ब्रह्म समाज' के अध्यक्ष और आचार्य बन गये। लगभग 20 सालों तक देश–विदेश में बतौर लेखक, कवि, साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक और भाषाविद् के रूप में प्रसिद्धि हासिल करने के बाद 9 जनवरी, 1923 को अँग्रेजों का गुरूर तोड़ने वाले इस पहले भारतीय आई.ए.एस. अधिकारी का कोलकाता में निधन हो गया।

डॉ. विमला भंडारी
सलूम्बर (राजस्थान)

पॉलीथिन की थैलियाँ

इधर–उधर उड़ती जाएँ,
चारों तरफ कहर ढाएँ।
घर में हो या हो बाहर,
ये ही ये नजर आएँ।

गरीब हो या हो अमीर,
लोग काम में लेते हर।
जब होता उपयोग खत्म,
फेंक तभी देते बाहर।

यह नाली को जाम करें,
मिट्टी को करती बंजर।
इनको खा पशु भी मरते,
बीमारी का बनती घर।

अब इसके दुष्प्रभाव से,
धरती को मुक्त कराएँ।
कपड़े के थैले लाएँ,
इनको न अपनाएँ।

पूर्णिमा मित्रा, बीकानेर (राजस्थान)

'पकड़ लिया डाकू' पृष्ठ 7 का शेष....

यह सब देख सुनकर तो बदमाशों के पाँव पूरी तरह उखड़ गए। खतरे को भाँपकर वे भागने की तैयारी करने लगे। मगर यह भी अब क्या इतना आसान रह गया था। विवेक ने अपने शिकार को शिकंजे में जकड़ रखा था। उसने लाख छुड़ाने की कोशिश की मगर विवेक को न छोड़ना था और न उसने छोड़ा जब तक कि पड़ोस के मददगार नहीं आ गए।

सिर्फ विवेक ने जिसे पकड़ रखा था वही नहीं उन बदमाशों में से दो और बदमाश पकड़ लिए गए। विवेक के घायल पिता और माँ को अस्पताल ले जाया गया। मगर अफसोस की बात यह रही कि विवेक के घायल पिता ने अस्पताल पहुँचने से पहले ही अपना दम तोड़ दिया।

विवेक ने हौसले से बदमाशों से मुकाबला करते हुए उन्हें पकड़वा कर अद्‌भुत साहस का परिचय दिया। विवेक की इस बहादुरी के लिए उसे वर्ष 2003 का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

रंग भरो

शांतिदूत को देखने के लिए ★ वाले खानों में भूरा और △ वाले खानों में केसरिया रंग भरिए।

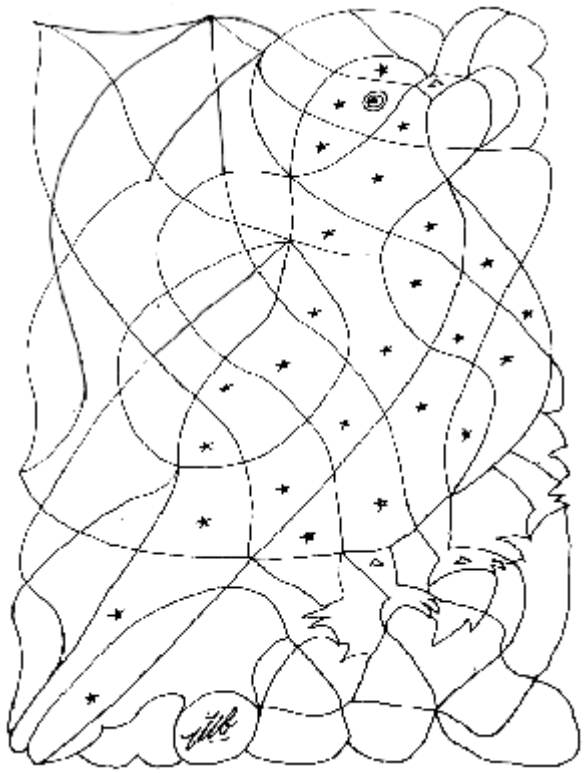

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

जिसे ज्ञान अर्जित करना होता है, वह अपने को जाति-धर्म की सीमाओं में नहीं बांधता और यह बात एक बार फिर सिद्ध कर दी है महाराष्ट्र निवासी अब्दुल हसन अब्दुल निसार ने, जिन्होंने इस्कॉन इंटरनेशनल की अयोध्या इकाई द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित भगवदगीता और कृष्ण के उपदेशों पर आधारित प्रतियोगिता जीत ली। इसमें जहां दुनियाभर के 3,000 से ऊपर प्रतिभागी शामिल थे, इन्होंने पचास में सभी पचास प्रश्नों के सही उत्तर देकर सबको चौंका दिया।

भारत में 52 दरवाज़ों वाला महाराष्ट्र का एक अनोखा शहर है औरंगाबाद जिसका नाम बदलकर अब संभाजीनगर कर दिया गया है।

कहा जाता है कि मराठाओं से इस शहर की सुरक्षा के लिए मुगलों ने इस शहर के चारों ओर दीवार का निर्माण करवाया था जिसमें करीब छोटे-बड़े 52 गेट्स वक़्त के साथ बनवाए गए थे।

इन 52 में से 4 चारों दिशाओं में मुख्य प्रवेश द्वार बने। मक्का गेट पश्चिम की ओर, उत्तर में दिल्ली गेट, पूर्व में जालना गेट और दक्षिण में पैठण गेट।

रंगीन दरवाज़ा, काला दरवाज़ा, भदकल गेट, रोशन गेट के अलावा औरंगाबाद में और भी छोटे-बड़े गेट हैं जिनमें बेगम दरवाज़ा, इस्लाम दरवाज़ा, खूनी दरवाज़ा, मीर आदिल दरवाज़ा, छोटा भदकल दरवाज़ा आदि शामिल हैं।

जैसलमेर (राज.) का कुलधारा गांव, जिसे पालीवाल ब्राह्मणों ने सन 1291 में बसाया था, पूरीतरह 'शापित माना जाता है। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहां रहने वाले ब्राह्मणों ने किन्हीं कारणों से इसे रातोंरात छोड़ दिया था और तब से यह गांव ऐसा वीरान हुआ कि दहशत के मारे यहां अब कोई बसना नहीं चाहता। प्रचलित मान्यता के अनुसार यहां की रियासत का दीवान सालेम सिंह किसी ब्राह्मण कन्या से जबरन विवाह करना चाहता था जिसके लिए ब्राह्मण बिरादरी राज़ी नहीं थी अतः कोई विकल्प न होने के कारण उन्हें गांव छोड़ना पड़ा।

रवि लायटू
बरेली(उत्तर प्रदेश)

© gyashim@gmail.com/ 0 8077554901

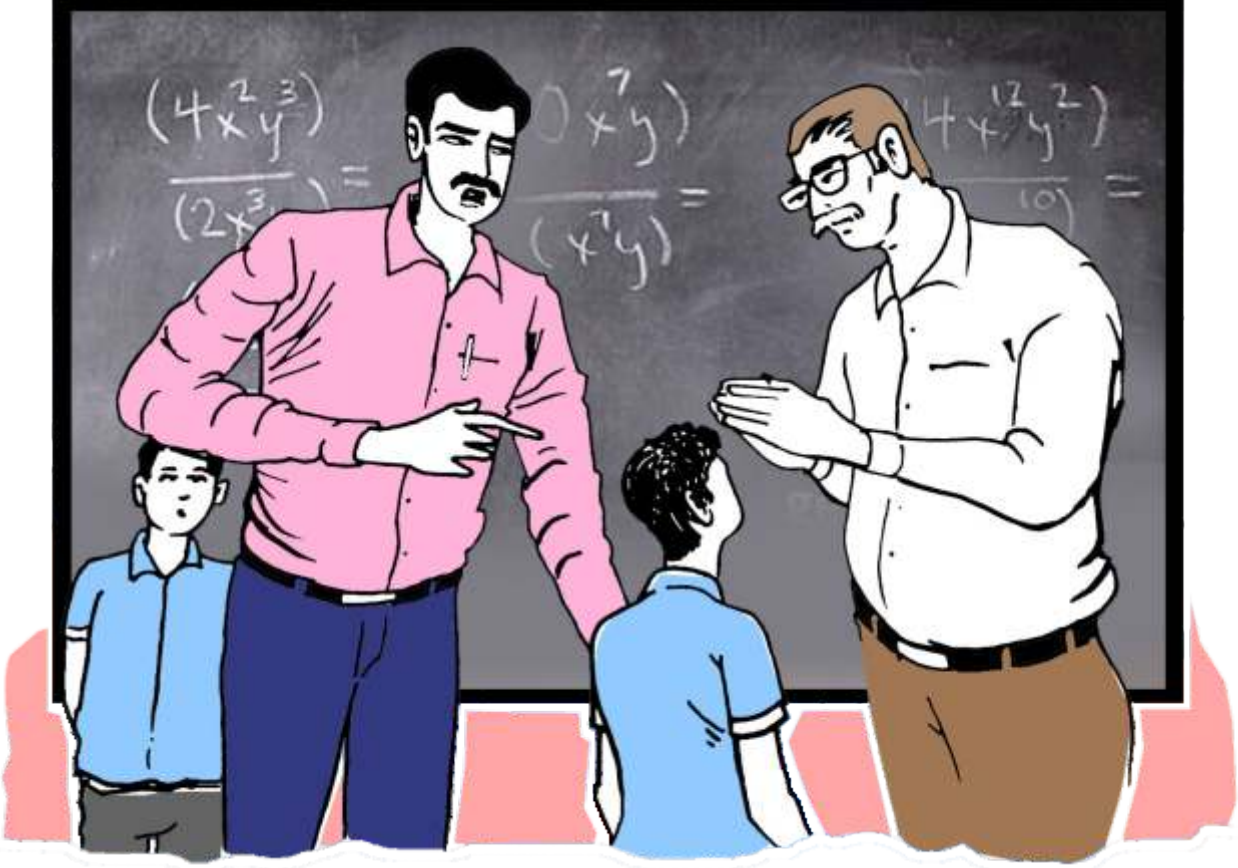

सबक

जैसे ही राजू की अर्द्धवार्षिक परीक्षा समाप्त हुई उसे डर सताने लगा कि त्रिपाठी जी, जो की उसके कक्षा अध्यापक थे उसे इस बार तो जरूर फेल कर देंगे। वह इसी सोच में गुमसुम बैठा था तभी उसका सबसे अच्छा दोस्त यश आया और बोला– "राजू क्यों परेशान हो? आज तो परीक्षा खत्म है, अब तो हम मजे करेंगे!'' राजू उदास होते हुए बोला– "यश तुम्हें तो पता है कि मेरे पिताजी बहुत गरीब है। वे बड़ी मुश्किल से मेरी फीस दे पाते हैं। त्रिपाठी जी मुझसे हर बार अपने पास पैसे देकर ट्यूशन पढ़ने के लिए कहते हैं और हर बार धमकी देते हैं कि यदि तुम मुझसे ट्यूशन नहीं पढ़ोगे तो मैं तुम्हें फेल कर दूँगा। दो बार की परीक्षा में तो उन्होंने मुझे कम नम्बर देकर पास किया जबकि में प्रथम श्रेणी में पास होता लेकिन इस बार वे मुझे फेल ही कर देंगे और यदि ऐसा किया तो मेरे पिताजी मुझे आगे नहीं पढ़ा पाएँगे"।

''तुम्हें पता है कि त्रिपाठी जी सारी बातें अकेले में करते हैं। इसलिए मैं किसी को बता भी नहीं सकता क्योंकि मेरे पास कोई सबूत भी नहीं है। मैं उनसे कई बार विनती कर चुका हूँ लेकिन वे लालच में इतने डूब चुके हैं कि मेरी बात सुनते ही नहीं।'' यश बोला– "राजू तू चिन्ता मत कर सब ठीक होगा।'' और दोनों घर की तरफ चल दिए। यश घर पहुँचा तो परेशान था। उसको देखकर उसके पापा बोले– "क्या बात है यश! बड़े परेशान हो?" तो यश बोला– "पापा मेरा एक दोस्त है राजू और हमारे एक अध्यापक उसको परेशान कर रहे हैं।" यश ने अपने पापा को सारी बात बता दी।

सारी बात सुनकर उसके पिता बोले– "ये तो गलत बात है। कोई अध्यापक किसी को भी अपने पास ट्यूशन पढ़ने के लिए बाध्य नहीं कर सकता।" उन्होंने राजू के द्वारा उस अध्यापक को सबक सिखाने की सोची। उन्होंने राजू को अपने पास बुलाया और

एक पेन दिया और बोले– "यदि इस बार वह अध्यापक ट्यूशन के लिए बाध्य करे तो इस पेन का बटन दबाकर बस जेब में रख लेना और सारी बात हो जाने पर मेरे पास आ जाना।''

राजू अगले दिन स्कूल पहुँचा तो त्रिपाठी जी ने कक्षा खतम होने के बाद उसे अपने कमरे में आने के लिए कहा। वह समझ गया कि त्रिपाठी जी उसे फिर ट्यूशन के लिए बोलेंगे। उसने पेन का बटन दबाया और जेब में रखकर उनके कमरे में पहुँचा तो त्रिपाठी जी ने कहना शुरू कर दिया– "राजू यदि तुम इस बार भी मुझ से ट्यूशन नहीं पढ़ोगे तो मैं इस बार तुम्हें फेल कर दूँगा। तुम्हारे पास कल तक का समय है, मुझे सोच कर बता देना। अब जाओ और पैसे का इन्तजाम करो।'' राजू ने फिर विनती की लेकिन त्रिपाठी जी टस से मस नहीं हुए।

राजू चुपचाप सुनकर आ गया। बाहर आते ही उसने देखा की यश के पापा उसे टिफिन देने के लिए आये हुए थे। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसने यश के पापा सारी बात बताई। उन्होंने राजू की जेब में रखे पेन को लिया और उसका बटन दबाया, उसमें त्रिपाठी जी द्वारा बोले गए शब्द रिकॉर्ड हो गए थे। राजू अब सारा मामला समझ गया था।

यश के पापा राजू को लेकर दोबारा त्रिपाठी जी के कमरे में गए और त्रिपाठी जी को रिकॉर्ड की हुई आवाज सुनाकर बोले– "त्रिपाठी जी! यदि आप मुझसे वादा करें कि आप राजू को ट्यूशन के लिए परेशान नहीं करेंगे तो मैं आपकी आवाज इसमें से हटा दूँगा वरना में अभी इसको आपके मुख्याध्यापक को सुना दूँगा और वे आपको नौकरी से बर्खास्त कर देंगे।''

ऐसा सुनते ही त्रिपाठी जी गिड़गिड़ाने लगे और बोले– "ऐसा मत करो। मैं वादा करता हूँ कि मैं राजू ही क्या, किसी को भी आज के बाद ट्यूशन के लिए बाध्य नहीं करूँगा और सबको मुफ्त में ट्यूशन दूँगा।'' उन्होंने राजू के सिर पर प्यार से हाथ फेरा और उससे माफी भी माँगी। यश के पापा ने पेन में रिकॉर्ड की हुई आवाज हटा दी और त्रिपाठी जी से बोले– "मैं ऐसा नहीं करना चाहता था लेकिन आपको आभास कराना जरूरी था।" उसके बाद राजू अच्छे नम्बरों से पास हुआ। त्रिपाठी जी अब सुधर गए थे और उनके व्यवहार में भी काफी परिवर्तन आया। राजू भी उनका प्रिय शिष्य बन गया था। त्रिपाठी जी भी उससे काफी खुश थे।

कुछ दिनों बाद राजू ने यश के घर जाकर उसे और उसके पापा को धन्यवाद दिया। उन्हीं की वजह से त्रिपाठी जी सुधर गए थे और उसको भी जबरदस्ती ट्यूशन नहीं पढ़नी पड़ी। यश के पिता बोले– ''नहीं राजू ये तो तुम्हारा हक था कि तुम ट्यूशन पढ़ो या नहीं, कोई भी तुम्हें जबरदस्ती इसके लिए नहीं कह सकता।'' राजू ने पूछा– ''आप ये पेन कहाँ से लाये?''

यश के पिता बोले– ''मैं अपनी कम्पनी में अपने साथियों को प्रशिक्षण देता हूँ, ये वही पर काम में लेता हूँ।'' राजू बोला– ''जो भी हो, बहुत काम की चीज थी।'' यश के पापा मुस्कुरा रहे थे।

राजेश मेहरा
नई दिल्ली

नकटू बन्दर

नकटू बन्दर बड़ा शैतान
सभी को करता है हैरान!

उछल–कूद यह खूब मचावे
पकड़ो तो पर हाथ न आवे,
जहाँ देखता कुछ खाने को
बन जाता जबरी मेहमान।...

जिस टहनी के फल यह खाता
नुकसान उसी को पहुँचाता,
डाँटो, खीं–खीं दाँत दिखाता
समझे खुद गामा पहलवान।...

नकल सभी की यह है करता
जैसी करनी, वैसी भरता,
फिर भी बाज नहीं आता यह
लाख खैंचो तुम उसके कान।...

राजेंद्र निशेश
चंडीगढ़

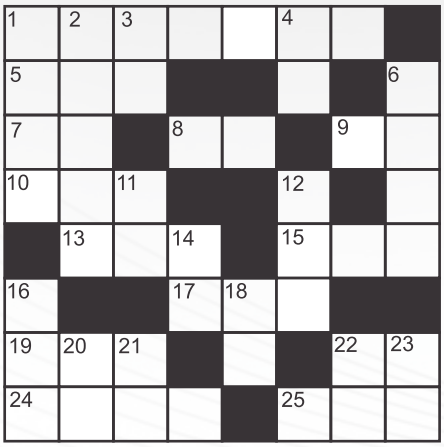

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

ऊपर से नीचे

1. प्रसिद्ध (4)
2. जोरदार (5)
3. अन्तर, फासला (2)
4. समय (2)
6. आम का रस (4)
11. नया, नवीन (2)
12. विचित्र, न्यारी, अनोखी (3)
14. गीला, तर (2)
16. समतल (3)
18. आवाज, रब (2)
20. दूर स्थित वस्तु के लिए बताने वाला सर्वनाम (2)
21. शिकन (2)
22. पलाश (2)
23. केश, कुंतल (2)

बाएँ से दाएँ

1. 1 मई को मजदूरों के निमित्त मनाया जाने वाला दिवस। (7)
5. राम को बेर खिलाने वाली स्त्री (3)
7. सुन्दर स्त्री (2)
8. सन्देह, शंका (2)
9. मूल्य, कीमत (2)
10. दाँत, दंत (3)
13. स्तुति करना (3)
15. दानव, दैत्य (3)
17. हिमाचल प्रदेश स्थित पर्यटन स्थल (3)
19. बरसात, वर्षा (3)
22. सड़क पर स्थित भोजन करने का स्थान (2)
24. घूमना (4)
25. प्रतिलिपि (3)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि जिस प्रकार जल में पड़ा होने पर भी पत्थर नरम नहीं होता, उसी प्रकार मूर्ख व्यक्ति की अवस्था होती है। ज्ञान दिए जाने पर भी उसकी समझ में कुछ नहीं आता।

रहिमन नीर पखान, बूड़े पैसी झैन हीं,

तैसे मूरख ज्ञान, बूझै पैसू झै नहीं।

दादा जी का वादा

दादा जी! ओ दादा जी!
हम सबको सैर कराने का,
किया आपने वादा जी।

वादा अपना आज निभाना,
हमको अपने गाँव घुमाओ।
देखें हम भी खेत खलिहान,
दादा हमको मत ललचाओ।
योजना हमने बना ली है,
मत डालो अब बाधा जी।...

किस्से निज गाँव के सुनाते,
बातें लड़कपन की बताते।
होता कितना गाँव निराला,
सुनकर हम अचरज कर जाते।
बोलो दादा जी! अब बोलो,
क्या है और इरादा जी।...

दादा बोले, बच्चो! सुन लो,
अपनी अभी पढ़ाई कर लो।
गर्मी में हम गाँव चलेंगे,
तब तक सब तैयारी कर लो।
गर्मी के दिन नहीं दूर है,
समय नहीं अब ज्यादा जी।...

उदय मेघवाल 'उदय'
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

प्यारा खरगोश

रूई रेशम सा खरगोश
सहमा–सहमा सा खामोश।
कान खड़े कर चौकन्ना हो
आँखें चमकाता खरगोश।

आया कोई डर जाता है
भोला–भाला सा खरगोश।
नन्हे–नन्हे पाँवों से चल
दौड़ा जंगल में खरगोश।

उसे शिकारी क्या पकड़ेगा
उड़ा हवा में जब खरगोश।
हरी–हरी ये दूब–पत्तियाँ
खाता नन्हा सा खरगोश।

दूध पिलाया घर में पाला
खुश है मुन्ने का आगोश।
कितना अच्छा कितना प्यारा
टिंकू का सुन्दर खरगोश।

पूरन सरमा
जयपुर (राजस्थान)

बेटी राजदुलारी

एक नया मोबाइल लेकर,
पापा जी घर आए।
इशिता और पलक ने झटपट,
फोटो दो खिंचवाए।

बैठ पास में पोज बनाया,
और तनिक मुस्कायी।
उन दोनों की तस्वीरें भी,
अनुपम मोहक आयीं।

चेहरे पर भोलापन झलका,
पर नटखट हैं भारी।
धमा–चौकड़ी दिनभर करतीं,
माँ समझाकर हारी।

मोबाइल से कभी न खेलें,
करतीं किन्तु पढ़ाई।
पीतीं दूध, सब्जियाँ खाएँ,
करतीं नहीं लड़ाई।।

खेलकूद भी विद्यालय में,
जो भी मैम कराएँ।
खेला करतीं दोनों बहनें,
जो भी उनको भाएँ।

जब 'बच्चों का देश' पत्रिका,
इनके घर में आती।
बिठा पलक को इशिता पहले,
सुन्दर चित्र दिखाती।

लगें बेटियाँ हमको सचमुच,
घर की राजदुलारी।
महका करती ये निशदिन ही,
बनकर के फुलवारी।

सन्तोष कुमार सिंह
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

सोच को बदलो

पात्र : सोनू (14–15 साल का लड़का), सोनू की माँ–सविता, सोनू के पापा–दीपक, विकास अंकल, सरला आँटी एवं सब्जी वाला दुकानदार–भोला

दृश्य : एक

(सोनू सब्जी मंडी में खड़ा है तथा तरह–तरह के फल–सब्जियाँ देखकर परेशान हो रहा है।)

सोनू : (एक दुकानदार से) भैया, मुझे कुछ फल–सब्जी खरीदने हैं।

भोला : बोलो, क्या–क्या दूँ भैया? सब है मेरे पास। यह देखो आलू, गोभी, मटर, टमाटर, भिंडी, पालक सब हैं और ऐसे ही पास की दुकान पर सेब, केला, संतरा, अंगूर, पपीता सभी फल भी तो हैं। जो कहोगे, वही मिल जाएँगे।

सोनू : (सोच में पड़ जाता है और बोलता है) अरे बाप रे! इतनी तरह–तरह के फल–सब्जी। क्या लूँ, क्या न लूँ, समझ में नहीं आ रहा। माँ रोज कैसे लाती है देख छाँटकर इतनी फल–सब्जियाँ? मैं तो एक दिन में ही परेशान हो गया।

(तभी एक महिला सरला आँटी वहाँ आती है।)

सोनू : (उसे देखकर) आँटी नमस्ते!

आँटी : नमस्ते बेटा! कैसे हो? आज तुम सब्जी–मंडी में कैसे?

सोनू : आँटी! आज हमारे घर में कुछ मेहमान आ रहे हैं। माँ व्यस्त है इसलिए माँ ने मुझे सब्जी व फल लाने भेजा है। मैने हाँ तो कर दी थी परन्तु अब मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा कि क्या लूँ, क्या न लूँ। क्या आप मेरी मदद करेंगी?

आँटी : जरूर करूँगी।

(कुछ ही देर में सोनू थोड़ी अपनी समझ तथा कुछ आँटी की मदद से सभी फल व सब्जियाँ खरीद लेता है और घर लौट आता है।)

दृश्य : 2

(सोनू का घर, सोनू सब्जी का थैला लेकर आया है तथा अपनी माँ को सभी सब्जियाँ और फल दिखा रहा है। सोनू के पापा भी ऑफिस से आ गए हैं तथा उनके साथ उनके एक मित्र विकास जी भी हैं।)

सोनू : माँ, देखो मैं कितनी जल्दी सभी फल व सब्जियाँ ले आया हूँ, वह भी एकदम ताजा और बढ़िया।

सविता : (थैले में से सब्जियाँ व फल निकालती है तथा उन्हें देखकर कहती है) अरे ये क्या फल ले आया तू? अमरूद, बेर, केले, देसी–पपीता, सीताफल।

सोनू : क्यों क्या हुआ? सब ताजा और बढ़िया हैं।

दीपक : बेटा, तुम्हारी माँ ताजा या बासी की बात नहीं कर रही। उसका मतलब है यह सभी तो स्थानीय और सस्ते फल हैं। मेहमानों के सामने बढ़िया फल लाने चाहिए थे। जैसे इंपोर्टेड खरबूजा, सेव, कीवी, स्ट्राबेरी आदि महँगे–महँगे फल वरना मेहमान क्या सोचेंगे?

सविता : और देखिए ना, सब्जियाँ भी ऐसी ही लाया है। पालक, गाजर, मूली, मैथी, चुकंदर, शलगम, देसी–टमाटर। ओहो! अब मैं क्या खिलाऊँगी मेहमानों को? मेरा भैया तो इन चीजों को छूता तक नहीं।

(कहकर एक ओर उदास और चिन्तित होकर बैठ जाती है।)

विकास : (उन्हें उदास देखकर) क्या बात है भई! आप लोग इतने परेशान क्यों हो रहे हो?

दीपक : अरे भाई! सोनू को सब्जियाँ–फल लाने भेजा था। बच्चा है। उसे कुछ समझ तो है नहीं। सभी सस्ते फल और सब्जियाँ ले आया। आप ही बताइए ऐसे में ससुराल वालों के आगे मेरी नाक नहीं कटेगी क्या?

सोनू : (रुआँसा होकर) मैं क्या करूँ, पापा मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था? जो मुझे देखने में ताजा और अच्छे लगे तथा कुछ जो सरला आँटी ने दिलवाए, मैं वही लेकर आ गया।

विकास : मुझे तो यह अच्छे ही लग रहे हैं। भाई साहब! मेरे ख्याल से तो सोनू ने यह फल और सब्जियाँ लाकर कोई गलती नहीं की। यदि आप लोग समझते हैं कि महँगे, बेमौसम के तथा इंपोर्टेड फल–सब्जियाँ ही अच्छे होते हैं तो यह आपकी गलतफहमी है।

दीपक : कैसे? यदि महँगे फल–सब्जियाँ अच्छे नहीं होते तो लोग ज्यादा पैसे देकर उन्हें क्यों खरीदते हैं?

विकास : भाई साहब, इस दुनिया में मूर्खों की कमी नहीं है। वे ऐसा अज्ञानतावश और दिखावे के लिए करते हैं।

सविता : कैसी अज्ञानता?

विकास : भाभी जी, विज्ञान कहता है कि हमें स्थानीय व मौसमी फल–सब्जियाँ ही अधिक खाने चाहिए। उनको खाने से हमें बहुत से फायदे होते हैं।

दीपक : वह क्या हैं, हमें बताइए ना, विकास जी।

विकास : मौसमी फल व सब्जियों में मौसम के अनुकूल सभी विटामिन व पोषक तत्व होते हैं जो हमें उस मौसम में चाहिए अतः वह हमें भरपूर पोषण देतीं हैं। जैसे सर्दी के मौसम में संतरे आते हैं जिनमें विटामिन सी होता है और वह सर्दियों में हमारी रूखी त्वचा की रक्षा करता है। इसी प्रकार आँवला, पालक, बथुआ आदि हरी सब्जियाँ रोग–प्रतिरोधक शक्ति तथा विटामिनों से भरपूर होती हैं। इसी प्रकार गर्मियों में आने वाले फल–सब्जी हमें ठंडक प्रदान करते हैं जो कि हमारी गर्म मौसम से लड़ने में मदद करते हैं। यह सब प्रकृति के वरदान हैं।

सोनू : अंकल, आप ठीक कह रहे हैं। गर्मी के मौसम में खरबूजा, तरबूज आदि मौसमी फल हमें भरपूर ताजगी देते हैं तथा गर्मी दूर भगाते हैं।

सविता : भाई साहब, मैंने देखा है हमारे फलों और विदेशी फलों के रंग रूप में तथा स्वाद में भी काफी फर्क होता है। उसका क्या कारण है?

विकास : भाभी जी, विदेशी फल क्योंकि बहुत दूर से आते हैं, अतः उन पर कई प्रकार के केमिकल्स लगाए जाते हैं ताकि वे खराब न हों। उन्हें पूरी तरह से पेड़ पर पकने भी नहीं दिया जाता और कच्चे तोड़कर ही पैक कर दिया जाता है और फिर दवाइयों के द्वारा उन्हें पकाया जाता है। देसी फल–सब्जी डाल पर ही पकते हैं तथा उन पर रासायनिक दवाइयों का भी इतना अधिक प्रयोग नहीं करना पड़ता। अतः उनका रंग–रूप भी सुन्दर होता है तथा वे स्वादिष्ट भी लगती हैं।

सोनू : अंकल, जब मैं हमारे घर में लगे अमरूद के पेड़ पर से अमरूद तोड़कर खाता हूँ तो वह बहुत स्वादिष्ट लगता है। बाजार से लाया हुआ अमरूद इतना अधिक स्वादिष्ट नहीं लगता। इसका क्या कारण है?

विकास : बेटा फल और सब्जियों को तोड़कर जितनी अधिक देर रखा जाता है उतना ही वह फल सब्जी अपना स्वाद खो देते हैं। बाहर से आने वाले फल–सब्जियों के साथ भी यही होता है क्योंकि वे काफी दूर से आतीं हैं अतः वह अपना रंग–रूप व स्वाद खो देते हैं। जानते हो कोल्ड स्टोरेज में अधिक दिनों तक रखने से भी फल–सब्जी अपने पोषक तत्व तथा स्वाद खो देते हैं।

सविता : मैंने सुना है कि विदेशों के फल सब्जियों की क्वालिटी हमारे फल–सब्जियों से कहीं बेहतर होती है। ऐसे में उन्हें खाने से फायदा ही होता होगा।

विकास : निःसंदेह कई विदेशी फल–सब्जियों की क्वालिटी हमारे फल–सब्जियों से बेहतर होती है परन्तु वे हमें इतना फायदा नहीं पहुँचाती जितना विदेशी लोगों को।

सोनू : अरे वाह! यह क्या बात हुई? इससे क्या फर्क पड़ता है? हम उस देश में रहते हैं या नहीं।

विकास : पड़ता है। हर जगह का मौसम–जलवायु अलग होता है तथा वहाँ के फल–सब्जी उसी मौसम व जलवायु के अनुकूल पनपते हैं अतः उन्हीं लोगों को ही ज्यादा फायदा पहुँचाते हैं। कई बार तो ऐसा भी होता है की विदेशी फल सब्जी हमें फायदा पहुँचाने की जगह नुकसान पहुँचाते हैं तथा कई रोग पैदा कर देती हैं।

सविता : हाँ, मैंने सुना है कि कई विदेशी फल अपने साथ–साथ रोगों के वायरस लेकर हमारे देश में प्रवेश कर जाते हैं तथा वे रोग फैलाते हैं।

दीपक : बाप रे! यह तो बहुत खतरनाक बात है। ऐसे फल सब्जी खाने से क्या फायदा?

विकास : हाँ, एक बात और है स्थानीय फल–सब्जियाँ खरीदने से हमारे आस–पास के किसानों को भी फायदा होता है। हमारा पैसा हमारे पास ही रहता है तथा कृषि को बढ़ावा मिलता है। कृषि के विकास से देश में अन्य कई विकास भी सहज ही हो जाते हैं।

सोनू : पापा, हमारे अध्यापकजी ने बताया था कि बेल, सीताफल, अमरूद आदि फल भले ही सस्ते होते हैं परन्तु इनमें जो पोषक तत्व होते हैं वे अनमोल हैं।

दीपक : (हँसते हुए) भई मौसमी फल–सब्जियाँ खाने का एक लाभ तो मुझे भी पता है। वे बेमौसम के फल–सब्जियों से सस्ते आते हैं तथा जेब पर भारी नहीं पड़ते।

विकास : बिलकुल ठीक कह रहे हैं आप। स्थानीय फल–सब्जियों पर टैक्स की मात्रा बहुत कम होती है। उन पर ट्रांसपोर्ट का खर्चा भी नहीं आता। अतः वह बहुत सस्ते मिलते हैं।

सविता : यानी कि सोनू बिलकुल सही फल–सब्जी लाया है, स्थानीय व मौसमी।

विकास : हाँ, बिलकुल सही हैं। क्या आप जानती हैं भले ही सोनू सस्ती फल–सब्जी लाया है परन्तु पोषक तत्वों में यह महँगे फल व सब्जियों से कहीं कम नहीं हैं।

दीपक : फिर तो आगे से हम यही खाया करेंगे तथा अपने मेहमानों को भी यही खिलाएँगे। अब मेहमानों को भी बता देंगे कि फिजूल में इंपोर्टेड फलों पर पैसा खर्च करना व्यर्थ है। हम उन्हें स्थानीय व मौसमी फल–सब्जी खाने के लाभ बता देंगे।

विकास : हाँ, देश के विकास के लिए तथा अच्छे स्वास्थ्य के लिए हम सबको ही समझदार बनना पड़ेगा और अपनी सोच को बदलना ही होगा।

कुसुम अग्रवाल
कांकरोली (राजस्थान)

खूबसूरत वन प्राणी

पांडा

चीन के जंगलों में भालू से मिलता जुलता एक खूबसूरत वन्य प्राणी दिखाई देता है, जिसे चीनी भाषा में बिशुंग कहा जाता है, जिसका अर्थ है पांडा। हाँ, पांड़ा सचमुच एक खूबसूरत और अहिंसक जीव है, इसके जिस्म पर पीला सफेद फर होता है। कंधे, कान, चारों पैर, आँखों के आस पास का फर गहरा काला होता है। इसके काले शरीर पर सफेद, पीले रंग का फर खूब सुन्दर लगता है। इसी कारण यह बच्चों का प्रिय वन्य प्राणी भी है।

पांडा बाँस के पेड़ों पर उल्टा सीधा तिरछा चलकर तरह–तरह की कलाबाजियाँ दर्शाता है। कभी बड़ी अदा से आँखों को इधर–उधर घुमाता है, तो कभी उछलकूद करते हुए मुस्कुराता है। इसकी इन्हीं हरकतों के कारण बच्चों के प्रिय खिलौने टेडी बीअर का चलन हुआ। चीन के दक्षिणी पश्चिम भाग में हरे भरे पेड़, ऊँचे–ऊँचे पर्वत और घने जंगल है। यह क्षेत्र लगभग 1000 किलोमीटर के दायरे में फैला हुआ है। यह पूरा जंगल ही पांडा का घर कहलाता है।

पांडा औसतन 16 मीटर लम्बा और 70–110 किलोग्राम वजन का होता है, शक्ल सूरत में यह भालू जैसा ही नजर आता है। इसके बच्चे भालू शावकों के समान पैदाइश के वक्त अंधे व असहाय होते हैं, साढ़े चार महीने के गर्भकाल के बाद ये लगभग 200–250 ग्राम के पैदा होते हैं। इनका रक्त सीरम भी भालू के रक्त सीरम से मिलता जुलता है।

मादा पांडा कद में कुछ छोटी और मोटी होती है। ये जमीन पर सूखे पतों का घर बनाकर उनमें बच्चों को छिपाकर रखती है। समय–समय पर दूध पिलाती है और देखभाल करती है। 10–15 दिनों उपरान्त इसके प्यारे बच्चे इधर–उधर फुदकने लगते हैं। जब ये कुछ बड़े हो जाते हैं तो नर पांडा इन्हें अपनी पीठ पर लादकर पेड़ों की सैर कराता है, उन्हें पेड़ों पर चढ़ने उतरने और तरह–तरह के करतब दिखाने के प्रशिक्षण देता है। कच्ची उम्र से ही ये बच्चे पेड़ों पर चढ़ने उतरने और करतब दिखाने में माहिर हो जाते हैं।

चीन के जंगलों में 2 अक्टूबर 1869 के दिन पांडा की खोज की गई थी, इसे खोजने का श्रेय एक फ्रेंच यात्री डेविड को है। फ्रेंच शरीर रचना विशेषज्ञ

देखें पृष्ठ 25...

वनराज की भूल

भाँति–भाँति के फलदार वृक्षों, नरम, मुलायम घास के चारागाहों तथा ठंड़े, मीठे स्वच्छ जल के छोटे–बड़े कई तालाबों वाला सुन्दरवन सचमुच ही बहुत सुन्दर था। सबसे अच्छी बात यह थी कि सुन्दरवन का राजा शेर सिंह अत्याचारी और निर्दयी नहीं था। वे सुन्दरवन के पशु–पक्षियों को अनावश्यक परेशान नहीं करते थे। सुन्दरवन के जानवरों ने मिलकर स्वयं ही वनराज के भोजन की व्यवस्था कर रखी थी। अपना भोजन मिल जाने के बाद वनराज शान्तिपूर्वक अपनी गुफा में शान्त रहते थे। छोटे–बड़े सारे जानवर आपस में प्रेम से रहते थे और निर्भय होकर सुन्दरवन में विचरण किया करते रहते थे।

वनराज का प्रधानमन्त्री हिरणनाथ भी बहुत ही नेक और रहमदिल था। वह सभी जंगलवासियों का ध्यान रखता था, साथ ही वनराज को सदैव सही और उचित सलाह दिया करता था। इतना ही नहीं हिरणनाथ का पूरा परिवार हर समय सुन्दरवन की चौकीदारी में लगा रहता था। अगर शिकारी सुन्दरवन के आसपास दिखायी देता तो उसकी सूचना हिरणनाथ को मिल जाती थी और हिरणनाथ तुरन्त उसकी खबर वनराज शेर सिंह को दे देता था। फिर शेर सिंह सुन्दरवन में चारों ओर घूमकर ऐसी भयंकर गर्जना करते थे कि शिकारी अपनी जान बचाकर भाग खड़े होते थे। इस प्रकार सुन्दरवन में बहुत शान्ति थी और वहाँ के सभी पशु–पक्षी सुखपूर्वक रह रहे थे।

एक बार जाड़े के दिनों में भारी वर्षा हुई जिसमें मन्त्री हिरणनाथ भींग गए। भींगने के कारण वह बीमार पड़ गए और कुछ दिनों की बीमारी के बाद उनकी मृत्यु हो गयी। हिरणनाथ के मरने के बाद सुन्दरवन का उपमन्त्री कालू लंगूर वनराज का मन्त्री बन गया। कालू बहुत ही दुष्ट और मतलबी स्वभाव का था। हिरणनाथ के मन्त्री रहते कालू की जरा भी नहीं चलती थी। वनराज भी हिरणनाथ की ही राय सुनते थे और सुन्दरवन के जानवर भी हिरणनाथ की ही बात माना करते थे। इस कारण कालू सुन्दरवन के सभी जानवरों से बहुत नाराज रहा करता था। मन्त्री बन जाने के बाद कालू को अपनी मनमानी करने का मौका मिल गया। अब तो वह वनराज को गलत सलाह देने

लगा था और सुन्दरवन के जानवरों को तरह–तरह से परेशान भी करने लगा था। वनराज की कमी यह थी कि वे अपनी माँद से बाहर बहुत कम निकला करते थे। सुन्दरवन की सारी व्यवस्था उन्होंने अपने मन्त्री कालू लंगूर के भरोसे छोड़ रखी थी।

हिरणनाथ के मर जाने तथा कालू लंगूर के मन्त्री बन जाने के बाद सुन्दरवन की चौकीदारी बन्द हो गयी थी। अब शहर के बहेलिए बिना किसी रोक–टोक के सुन्दरवन की तरफ आने और जाल लगाने लगे थे। जंगल के पक्षी आए दिन बहेलियों की जाल में फँसने और मारे जाने लगे थे। परेशान होकर एक दिन सारे पक्षी वनराज के पास गए और बोले– ''हमारी रक्षा करें महाराज! पिछले कई दिनों से हमारे इस सुन्दरवन में बहेलिए आने लगे हैं। वे लोग जाल लगाकर हम सबको पकड़ने लगे हैं। अब तक हमारे परिवार के कई सदस्य या तो मारे जा चुके हैं या जाल में फँसाकर सुन्दरवन से बाहर ले जाए जा चुके हैं।''

''क्या....हमारे सुन्दरवन में बहेलिए आने लगे हैं? कालू मन्त्री ने तो यह बात मुझे नहीं बताई।'' वनराज चौंक कर बोले। ''हाँ महाराज! एक नहीं कई बहेलिए आने लगे हैं।'' कमलू कबूतर ने कहा। ''ठीक है आप लोग निश्चिन्त होकर जाइए। मन्त्री जी से विचार–विमर्श करके शीघ्र ही मैं बहेलियों को रोकने का कोई उपाय करूँगा।'' वनराज शेर ने पक्षियों को आश्वासन देकर वापस भेज दिया। वनराज ने तत्काल अपने मन्त्री कालू को बुलवाया और उससे पूछा– ''कालूरामजी, हमने सुना है, हमारे सुन्दरवन में कई बहेलिए आने लगे हैं। यहाँ से बहुत सारे पक्षियों को पकड़ ले गए हैं। इन पक्षियों की सुरक्षा के लिए हमें कुछ पक्का उपाय करना चाहिए।''

''महाराज आप बिलकुल भी परेशान न हों। बात इतनी बड़ी नहीं है जितना ये पक्षी हाय–तौबा मचा रहे हैं। आपको इन छोटी–छोटी बातों के लिए चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं देख लूँगा इस समस्या को। वैसे भी हमारे इस सुन्दरवन में पक्षियों की जनसंख्या बहुत बढ़ गई है। हजारों की संख्या में पक्षी हमारे लिए बोझ बने हुए हैं। अगर उनमें से सौ–पचास मर भी जायेंगे तो हमारे सुन्दरवन पर कोई खास असर नहीं पड़ने वाला।'' कालू ने कहा तो वनराज निश्चिन्त हो गए।

दुष्ट कालू ने बहेलियों से पक्षियों के बचाव के लिए कोई उपाय नहीं किया। उल्टे पक्षियों पर गुस्सा होने लगा कि वे अपनी फरियाद लेकर वनराज के पास क्यों गए? परिणाम यह हुआ कि बहेलियों की रोज–रोज की धर–पकड़ से परेशान पक्षियों ने एक–एक करके सुन्दरवन छोड़ दिया और दूसरे वनों में चले गए। जब पक्षी मिलने बन्द हो गए तो बहेलियों ने तो सुन्दरवन में आना छोड़ दिया लेकिन अब शिकारी आने लगे। वे आए दिन किसी न किसी खरगोश, हिरन, नीलगाय, गीदड़ या जंगली बकरे आदि जानवरों को मारने लगे। इस प्रकार सुन्दरवन में पशुओं की संख्या तेजी से कम होने लगी थी। वहाँ के जानवर हर समय शिकारियों के डर में जीने लगे थे।

आखिर एक दिन जानवरों के सभी परिवारों के बड़े–बुजुर्ग एकत्र हुए और वनराज शेर के पास अपनी फरियाद लेकर पहुँचे। ''आजकल शिकारियों ने सुन्दरवन में आतंक मचा रखा है महाराज। वे आए दिन दो–चार जानवरों को मारकर ले जाने लगे हैं। हमारी जिन्दगी हर समय खतरे में रहती है। पता नहीं कब किसकी मौत आ जाय। आप शिकारियों से हमारी रक्षा करें महाराज।'' सभी जानवरों ने हाथ जोड़ कर वनराज शेर से निवेदन किया। वनराज ने समझा बुझाकर तथा रक्षा करने का आश्वासन देकर जानवरों को वापस भेजा और अपने मन्त्री कालू को तुरन्त बुलवाया।

''मैं देख रहा हूँ कि हमारे सुन्दरवन में शिकारियों का आतंक बढ़ता जा रहा है। पहले पक्षी मारे गए, अब जानवर मारे जा रहे हैं। इसे रोकना बहुत जरूरी हो गया है। इसके लिए हमें क्या करना चाहिए कालूराम?'' शेरसिंह ने अपने मन्त्री कालू से पूछा।

''आप अपनी गुफा में चलकर आराम करें महाराज। यह कोई इतनी बड़ी समस्या नहीं है कि जिसके लिए आपको परेशान होना पड़े। हमारे इस सुन्दरवन में छोटे जानवरों की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। अगर इनकी संख्या ऐसे ही बढ़ती रही तो सुन्दरवन में सभी के लिए रहने के लिए जगह और खाने के लिए घास की समस्या उत्पन्न हो जाएगी। अच्छा ही है अगर शिकारी कुछ फालतू और निकम्मे जानवरों को समाप्त कर दें तो सुन्दरवन पर बोझ कम हो जाएगा। शिकारियों का आना तो हम जब चाहेंगे

तब बन्द कर देंगे।'' कालू ने वनराज को समझा दिया और वनराज उसकी बातों में आकर निश्चिन्त हो गए।

शिकारी सुन्दरवन में आते रहे और जानवरों को मारते रहे। अपने बचाव का कोई और उपाय न देख कर पक्षियों की ही तरह जानवर भी सुन्दरवन छोड़ कर दूसरी जगहों को जाने लगे। धीरे–धीरे स्थिति यह हो गयी कि सारा सुन्दरवन जानवरों से खाली हो गया। जब जानवर नहीं रहे तो वनराज शेर के भोजन के लिए शिकार मिलना भी मुश्किल हो गया। मन्त्री कालू लंगूर के लिए तो कोई समस्या नहीं थी। वह पेड़ों पर उछल–कूदकर के फल खा लेता था और इस प्रकार अपनी भूख मिटा लेता था। लेकिन वनराज शेर भोजन की तलाश में सारे दिन सुन्दरवन में मारे–मारे फिरने लगे। कहीं कोई छोटा–मोटा शिकार मिल गया तो ठीक वरना उनको भूखा ही रह जाना पड़ता था। ठीक से भोजन न मिलने के कारण वनराज शेर काफी सुस्त और कमजोर हो गए थे।

एक दिन शिकार के लिए घंटों भटकने के बाद भूख से बेहाल वनराज शेर एक पेड़ के नीचे चुपचाप लेटे हुए थे। उसी समय सुन्दरवन में कुछ शिकारी आए। शिकारियों की निगाह वनराज पर पड़ गयी। शिकारियों ने सोचा कि अगर किसी तरह शेर को पकड़ लें तो उसे सर्कस वालों के हाथों बेचकर अच्छा पैसा कमा सकते हैं। अगले दिन वे लोग एक बकरा तथा लोहे के तारों से बना एक मजबूत जाल लेकर जंगल में आए। एक सुनसान जगह पर बकरे को बाँध कर उन्होंने चारों तरफ जाल फैला दिया और छुपकर बैठ गए। कई दिनों के भूखे वनराज शेर शिकार की तलाश में भटक रहे थे। भटकते–भटकते उस ओर आए तो बकरे को देखकर उनके मुँह में पानी भर आया। बिना सोचे, विचारे वे तेजी से बकरे की तरफ लपके। लेकिन ज्योंही बकरे के पास पहुँचे कि घात लगाकर दूर बैठे शिकारियों ने जल्दी से जाल कस दिया। इस प्रकार वनराज शेर शिकारियों के जाल में फँस गए। शेर ने जाल से निकलने के लिए बहुत हाथ–पाँव मारे, लेकिन सब व्यर्थ रहा। शिकारियों ने जाल को ठेले पर लादा और लेकर चले गए।

जाल में फँसे वनराज शेर पछताने लगे कि– ''काश! हमने बेचारे पक्षियों और जानवरों की बातों पर ध्यान दिया होता। काश! हमने कालू लंगूर की सलाह पर भरोसा करने के बजाय अपनी बुद्धि से काम लिया होता। बहेलियों और शिकारियों ने जब सुन्दरवन में आना शुरू किया था तभी उनको रोक दिया होता, तो आज यह दिन देखने को नहीं मिलता। लेकिन अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।''

ठीक ही कहा गया है कि किसी भी समस्या को उसके प्रारम्भ होते ही हल कर लेना ठीक होता है। वरना छोटी समस्या भी बाद में गंभीर रूप ले लेती है और तब उससे निपटना कठिन हो जाता है।

अखिलेश श्रीवास्तव चमन
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

बहेलिए – पक्षियों को पकड़ने वाला व्यक्ति, शिकारी

'खूबसूरत वन प्राणी पांडा' पृष्ठ 22 का शेष...

एडवर्ड ने जंगल में मृत पांडा के कंकाल एवं हड्डियों का सूक्ष्म अध्ययन किया तो विदित हुआ कि यह भालू की अपेक्षा लाल पांडा तथा जंगली रैकून का नजदीकी रिश्तेदार है। ओलिंगो, जओटी फेरियट, कोटाटी एवं किंकाजू जैसे प्राणियों वाला यह परिवार प्रोसायोनिडि कुल के नाम से जाना जाता है। एडवर्ड ने गम्भीर रूप से सोच विचार करने के बाद इस प्राणी को एक नया वैज्ञानिक नाम दिया 'ऐलुरोपीडा' जो बाद में चर्चित हुआ।

दरअसल पांडा विशेष तौर से बाँस को अपना भोजन बनाता है। इस कारण कठोर भोजन के अनुरूप इसके पेट का अन्दरूनी अस्तर काफी मोटा और कठोर होता है। पांडा यूँ तो भालू की तरह ही दिखाई देता है, लेकिन इसकी भालू से कुछ समानताएँ भी है। जैसे ऐसा कंकाल तंत्र जो एक बड़े सिर को आधार देता है, इसके अतिरिक्त चाल ढाल भी भालू की तरह प्रतीत होती हैं।

कमल सोगानी
भवानीमंडी (राजस्थान)

जीवन की आत्मा है संग

विद्वानों के मतानुसार मनुष्य जीवन के साथ ही संगीत का जन्म भी हो चुका था। शिशु के जन्म के बाद उसके दिल की धड़कन, रोना और हँसना, सभी में लय और स्वर विद्यमान है। इसीलिए मान सकते हैं कि संगीत और संगीत से जुड़े रस और भाव, हर मनुष्य और उसकी आत्मा के साथ जुड़ा हुआ है। सम्पूर्ण विश्व 22 जून को संगीत दिवस के रूप में मनाता है और इसी के तहत विभिन्न देशों, राज्यों के महाविद्यालयों और स्कूलों में इस दिवस का आयोजन किया जाता है।

भारत एक सशक्त और समृद्धशाली देश है। यहाँ का जलवायु, वातावरण और परिवेश ही नहीं अपितु हमारी संस्कृति और कला की वजह से भी पूरे विश्व में भारत की एक अनूठी पहचान है। प्राचीन काल से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत हमारी धरोहर है। इसमें इतिहास, विज्ञान, गणित, साहित्य, मनोविज्ञान, दर्शन शास्त्र, योग, दृश्य कला, चित्रकला, मूर्तिकला, चिकित्सा आदि विषयों का मिश्रण है। इन सभी विषयों के समागम से ही संगीत एक विशिष्ट विधा है और इसी कारण विश्व स्तर पर भारतीय संगीत ने अपना लोहा मनवाया है।

जीवन में संगीत का महत्त्व

बाल्यकाल से ही बच्चों को संगीत की शिक्षा दी जानी चाहिये है ताकि उन्हें हमारी कला और संस्कृति का ज्ञान हो। कला व संगीत से जुड़ने के कारण उनके अन्दर उत्पन्न नकारात्मक ऊर्जा भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित हो सके।

आज के युग में हमारे देश की युवा पीढ़ी का पाश्चात्य संगीत की तरफ अत्यधिक रुझान है जिसका प्रमुख कारण यह हैं कि बचपन से ही उन्हें घर पर या स्कूल में शास्त्रीय संगीत नहीं सुनाया गया। बाल्यकाल की अवस्था कच्चे घड़े के समान होती है जिसे केवल हम ही सही आकार दे सकते हैं। अगर प्रारम्भिक कक्षाओं से ही इन बच्चों को विद्यालयों में शास्त्रीय संगीत के प्रति प्रोत्साहित और रुझान पैदा किया जाए तो इन्हें हम हमारी भारतीय संस्कृति और कला की जड़ों से जोड़ सकते हैं। स्कूल में भजन और प्रार्थना सभा में गीत, रागों पर आधारित सिखाई जानी चाहिए जिससे बच्चों को शास्त्रीय रागों के बारे में जानकारी हासिल हो।

हिन्दुस्तान में एक से बढ़कर एक संगीत निर्देशक हुए जिन्होंने 70–80 के दशक और उससे भी पुराने समय के गीतों में रागों का बेहतरीन प्रयोग किया। बच्चों को पुराने गीतों की धुन जो किसी राग पर आधारित है उन्हें सिखाया जाना चाहिए और साथ ही कैसे राग में सात स्वरों का संयोजन किया जाता है, इसकी भी शिक्षा देनी चाहिए। ऐसा करने पर उनका शास्त्रीय संगीत की ओर रुझान बढ़ेगा

पंडित भीमसेन जोशी
शास्त्रीय गायक

गिरिजा देवी
ठुमरी गायिका

पंडित बिरजू महाराज
कत्थक नृत्य

उस्ताद अल्लारखा खान
तबला वादक

अल्लाह जिला बाई
मांड गायिका

ीत

पंडित रवि शंकर
सितार वादक

श्रीमती शरण रानी
सरोद वादिका

उस्ताद बिस्मिल्लाह खान
शहनाई वादक

पंडित विश्वमोहन भट्ट
मोहन वीणा वादक

श्रीमती एन राजम
वाइलिन वादिका

और वे उसकी बारीकियों को भी धीरे–धीरे समझने लगेंगे।

शास्त्रीय संगीत को प्रायः कठिन माना जाता है लेकिन यह भी सच है कि अगर शास्त्रीय संगीत की तालीम ठीक ढंग से ली जाए और उसे समझा जाए तो इससे अधिक कोई भी विषय दिलचस्प नहीं होगा। विद्यार्थियों को इसको समझने की, सीखने की उत्सुकता और लगन और भी बढ़ जाएगी।

पूरे भारतवर्ष में विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में संगीत विषय को बहुत महत्त्व दिया जाता है और विद्यार्थियों को ई लर्निंग के माध्यम से संगीत पढ़ाया और सिखाया भी जाता है। लेकिन अभी भी कई स्कूलों में इसका अभाव है। विद्यार्थी के मानसिक और बौद्धिक विकास में संगीत की शिक्षा अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगी।

अभिभावकों को भी इस विषय पर गहन चिन्तन करना चाहिए कि उनके बच्चों के लिए कौनसी सभ्यता और संस्कृति महत्त्वपूर्ण है। दौड़ भाग वाली जिन्दगी और प्रतियोगिता की भावना से आज के युग के इन बच्चों को बचाना होगा क्योंकि यह सिर्फ उनके लिए तनावग्रस्त माहौल पैदा करती है। पाश्चात्य संस्कृति की तरफ जो रुझान आज की युवा पीढ़ी का हो चला है उससे भी हमें उन्हें बचाना होगा ताकि वह हमारी संस्कृति, कला, सभ्यता की अमूल्य धरोहर को समझ सके और उसके प्रति उनका जो दायित्व है उसे वह पूर्ण रूप से निभा सकें।

डॉ. पामिल मोदी
उदयपुर (राजस्थान)

भारतीय संगीत का इतिहास

प्राचीन समय से लेकर आज तक संगीत विषय पर कई ग्रंथ पुराण और वेद लिखे गए हैं जिनमें सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और गंधर्व वेद सबसे अधिक प्रसिद्ध है। चार वेदों में से सामवेद में संगीत विषय पर चर्चा की गई है।

विद्या की देवी सरस्वती को संगीत की देवी भी कहा जाता है। प्राचीन मन्दिरों में वाद्य यंत्र व नृत्य मुद्राओं की मूर्तियों से यह पता चलता है कि हमारा संगीत कितना पुराना है। गुरु शिष्य परम्परा और घरानों का आविष्कार भी इसीलिए हुआ ताकि संगीत में रुचि रखने वाले शिष्य गुरु के पास रहकर उनसे विधिवत तालीम ले सके और घरानेदार गायकी सीख सकें।

परम्परागत गायन शैली को सीखने के लिए सर्वप्रथम विद्यार्थियों को बुनियादी तौर पर अभ्यास करना पड़ता है जो उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित और मार्गदर्शन देता है। किसी भी राग को सीखने से पहले सर्वप्रथम विद्यार्थियों को यह जान लेना जरूरी है कि संगीत क्या है? उसमें कौन सी विधाएँ होती है? भारतीय शास्त्रीय संगीत की कितनी गायन शैलियाँ है? साथ ही स्वर, लय, ताल का विशेष ज्ञान होना जरूरी है। संगीत की उत्पत्ति, संगीत में विभिन्न धारणाएँ, संगीत के विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों का ज्ञान, विभिन्न नृत्य शैलियों की सामान्य जानकारी, संगीत के विभिन्न कलाकारों और विद्वानों का योगदान ,इन सब के बारे में भी ज्ञान होना आवश्यक है। यह सब कुछ तभी सम्भव हो सकता है जब प्रारम्भिक अवस्था में ही संगीत विषय को एक मुख्य विषय के तौर पर कक्षा में पढ़ाया जाए।

बूँद-बूँद से भरता घड़ा

'बूँद–बूँद से घड़ा भरता' ये कहावत मुझ पर सौ टका खरी उतरती है। हाँ, आपने सही पहचाना। मैं आपका गुल्लक (पिगी बैंक) हूँ। आपके पैसे सँभालने वाला खिलौना। जब आप छोटे थे तब मुझ में पैसे जमा करने के लिए कितनी बार घर सिर पर उठा लेते। आपकी ऐसी हठ मुझे पुलकित कर देती। आपको जब भी नानी, दादी, मौसी, बुआ से पैसे मिलते, उन्हें लेकर तुरन्त मेरे पास आते और मुझ में डालकर निश्चिन्त हो जाते। सिक्कों की वह खनक आपके साथ मुझे भी रोमांचित कर देती।

आपको मालूम है मेरा आकार पिग की तरह क्यों होता है और मुझे पिगी बैंक कहकर क्यों बुलाया जाता है? कोई अन्य जानवर शेर, चीता, हाथी बैंक के नाम से क्यों नहीं पुकारा जाता। नहीं मालूम! चलो, आओ। मेरे पास बैठो। मैं अपनी कहानी सुनाता हूँ।

मेरा उपयोग कैसे शुरू हुआ? इससे जुड़ी कई कहानियाँ प्रचलित है। पन्द्रहवीं शताब्दी में यूरोप एक प्रकार की मिट्टी पिग से प्लेटें, बोतलें और बर्तन बनाए जाते थे। लोग अपने पास रखे छुट्टे पैसे को सुरक्षित रखने के लिए इन बर्तनों का इस्तेमाल करते थे। इस तरह इन बर्तनों को पिगी बैंक कहा जाने लगा, लेकिन धीरे–धीरे इस पिगी PYGG शब्द को गलती से पिग Pig समझा जाने लगा और कुम्हार पिग के आकार के गुल्लक बनाने लगे।

समय के साथ मेरे आकार और बनावट में काफी बदलाव आया और अब ऐसे गुल्लक भी उपलब्ध है जिन्हें फोड़ने की जरूरत नहीं पड़ती। इनमें एक ढक्कन होता है जिसे खोलकर पैसे निकाले जा सकते हैं। मुझे खोलने के लिए चाबी के साथ पासवर्ड वाला सिस्टम भी विकसित किया गया है। अब आपका पिगी बैंक तो पिग की बनावट पर भी निर्भर नहीं है। वर्तमान में खिलौने बनाने वाली कम्पनी के डिजाइनर ने बाल मनभावन अनुरूप कई तरह की गुल्लकों का निर्माण किया है, जैसे– बिल्डिंग, कार, ATM मशीन आदि। तकनीकी विकास के साथ मेरे निर्माण हेतु काम में लिया जाने वाला मटेरियल भी बदला है। मिट्टी के साथ–साथ मेरा निर्माण प्लास्टिक, स्टील और अन्य धातुओं से भी होने लगा है।

आपको भी मैं दोस्त के जन्मदिन पर, उपहार स्वरूप मिला। आप रोज दादी से एक सिक्का लेकर उसमें डालते हो और जब–तब उसका ढक्कन खोल कर गिनती करने बैठ जाते हो। जब सिक्के उछलकर इधर–उधर बिखर जाते तब मम्मी से डाँट भी पड़ती। आपकी रोनी सूरत मुझे बिलकुल भी अच्छी नहीं लगती। मुझे अपने नन्हें हाथों में पकड़ कर जब जोर–जोर से हिलाते हो तो सिक्कों की खनक के साथ, मैं भी खिल खिलाकर हँसता हूँ।

खिलौना कम्पनी ने आपको लुभाने के लिए मुझे विभिन्न आकार और रंगों में बनाया है ताकि मैं उपहार स्वरूप देने में प्रयोग किया जा सकूँ। कुछ दशक पूर्व सरकार और बैंक ने भी बचत को प्रोत्साहन देने के लिए मेरा निःशुल्क वितरण भी किया था।

दोस्तो! जैसे समय अपनी गति से आगे बढ़ता गया मेरे स्वरूप में परिवर्तन आते गए परन्तु एक चीज नहीं बदली। वह है मेरा संदेश– 'बचत करना अच्छी बात है'। आपकी बचपन में खेल–खेल में सीखी यह आदत बड़े होने पर नियम में बदल जाएगी। बचत भविष्य का आधार है। यह हमारे देश की आर्थिक वृद्धि और विकास को बल देता है। आपके चेहरे की मुस्कान बता रही है कि आप प्रतिवर्ष जन्मदिन पर एक गुल्लक खरीदेंगे और आने वाले जन्मदिन तक उसमें नियमित बचत के रूप में पैसे डालेंगे।

उषा सोमानी
चित्तोड़गढ़ (राजस्थान)

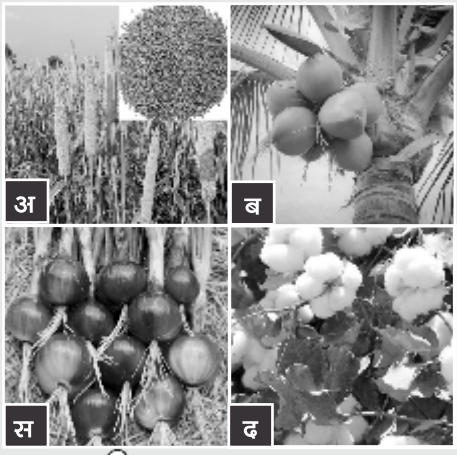

दस सवाल दस जवाब

(1) भारत के किन प्रदेशों में उपरोक्त फसलों का सबसे अधिक उत्पादन होता है?

(2) भारत के किस राज्य में गन्ने व गेहूँ की सर्वाधिक उपज होती है?

(3) भारत में हरित क्रांति की शुरूआत कब हुई?

(4) किस नदी क्षेत्र को 'चावल का कटोरा' कहा जाता है?

(5) 'श्वेत क्रान्ति' किसके उत्पादन से सम्बन्धित है?

(6) अंगूरों की खेती के लिए भारत का कौन सा शहर प्रसिद्ध है?

(7) किस फसल की कटाई व बुवाई में सबसे अधिक समय लगता है?

(8) सरसों की मिश्रित खेती किसके साथ होती है?

(9) हॉर्टीकल्चर के अन्तर्गत किस खेती का अध्ययन किया जाता है?

(10) भारत के किस राज्य में केसर का सबसे अधिक उत्पादन होता है?

उत्तर इसी अंक में

- एक बार दो आलसी रजाई ओढ़कर सो रहे थे। इतने में एक चोर आकर उनकी रजाई लेकर भाग गया। पहला आलसी– देख वो अपनी रजाई लेकर भाग रहा है।

  दूसरा आलसी– घबरा मत, जब तकिया चुराने आएगा तो उसे पकड़ लेंगे।

- शिक्षक– तुम आगे वाले लड़के के पेपर से नकल क्यों कर रहे हो?

  छात्र– सर, आपने ही तो कहा था कि जहाँ भी अच्छी चीज दिखे उसे ग्रहण कर लेना चाहिए।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

दानशीलता हृदय का गुण है, हाथों का नहीं।

❖

पढ़ने से सस्ता कोई मनोरंजन नहीं, न कोई खुशी उतनी स्थायी।

❖

मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितनी शरीर को व्यायाम की।

❖

बिना परिश्रम के कोई भी मूल्यवान वस्तु प्राप्त नहीं की जा सकती।

❖

प्रतिभावान में एक प्रतिशत प्रेरणा और निन्यानवें प्रतिशत परिश्रम है।

एडीसन

दोस्ती

कितनी अच्छी लगती मुझको
आँख दोस्त की प्यारी–प्यारी!
खेल रहीं हो जैसे मछली
पानी भीतर प्यारी–प्यारी।

लगता जैसे उतर नहर में
छपछप–छपछप हाथ हिलाऊँ।
या गाँव की पगडंडियों पर
बन जहाज सा उड़–उड़ जाऊँ।

रहे दोस्ती यूँ ही खिल–खिल
खेत–खेत में फसलों जैसी।
सर्दी में वह खिली धूप–सी
गर्मी में बस छाँह बड़ी सी।

दिविक रमेश
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

संयोग से मिली सफलता

दस बरस का योगेश अपने मजदूर माँ बाप के साथ छोटे से तम्बू में निवास करता था। पास ही बन रही दस मंजिला इमारत में पिछले छह माह से श्रम करके परिवार अपनी गुजर बसर कर रहा था। सुबह टिफिन पकड़ कर वह भी बिल्डिंग निर्माण पर पहुँच कर अपने माता पिता के काम में थोड़ा हाथ बँटाता और बाकी समय अपने बनाए खेल खेलता।

वैसे और बच्चे भी वंहाँ आते थे पर ठेकेदार से साफ निर्देश थे कि बच्चे झुंड बनाकर नहीं खेल सकते। उसको अपने शरीर को तोड़ मरोड़कर नयी मुद्राएँ बनाना और पत्थर बजाकर या खाली पेंट का डिब्बा पीट कर संगीत निकालने में बहुत मजा आता था। ऐसा करते हुए वह अपने में रमा रहता। एक दिन योगेश ऐसे ही मस्ती में डिब्बे से सही ताल और आवाज में तन्मय होकर एक फिल्मी गाना गाने में मगन था। संयोग की बात थी कि बिल्डिंग के साईट इंजीनियर उधर से गुजर रहे थे। इतना मधुर गीत सुनकर ऐसे भावविभोर हुए कि गाना सुनने दरवाजे पर खड़े हो गये और मोबाइल का विडिओ कैमरा ऑन करके रिकार्ड करने लगे।

इंजीनियर साहब दो मिनट उससे बात कर और शाबाशी के साथ सौ रुपए इनाम में देकर चले गए। योगेश को पहले तो कुछ समझ नहीं आया पर फिर दौड़कर अपनी माँ को सौ रुपए थमाते हुए पूरा किस्सा एक साँस में सुना आया। माँ ने उसकी पीठ थपथपाई और सौ रुपए पल्लू में बाँध अपने काम में लग गई। दो दिन बाद ही इंजीनियर साहब फिर आए और आते ही योगेश के बारे में पूछा। उसके पास पहुँचे तो वो एक खाली कमरे में हाथों के बल चलता मिला। सौ रुपए का पुरस्कार देने वाले व्यक्ति को फिर अपने सामने देख प्रसन्न हो गया। इंजीनियर साहब ने अपना मोबाइल निकाला और उसे दिखाते हुए बोले– "देखो, तुम्हारे विडिओ को दो दिन में दो लाख लोगों ने पसन्द किया है और दस लाख से ज्यादा लोगों ने देख लिया है। देखना, जल्दी ही तुम्हें कहीं अच्छे काम का अवसर मिलेगा। अब तुम एक बढ़िया सा गाना और सुना दो। इसको भी सोशल मीडिया पर डाल देंगे।"

योगेश को बातें थोडी बहुत ही समझ में आयी, पर वो गाने को तैयार हो गया। ओ! मेरे वतन के लोगों.. . गीत उसे पूरा याद था, जो उसने पूरी मस्ती में सुना दिया। विडिओ को वहीं से तुरन्त अपलोड कर दिया गया। उसकी उम्दा गायकी एक बार फिर लाखों व्यूज बटोरने में कामयाब रही। तीन दिन बाद ही इंजीनियर साहब फिर आ गए और साथ में एक और शख्स को साथ लाए। "ये मुम्बई के अच्छे म्यूजिक कम्पोजर है और तुमसे दो गाने गवाना चाहते हैं। बीस हज़ार रुपए मिलेंगे और तुम्हें मुम्बई में तीन दिन रहना पडेगा।"

योगेश अवाक खडा था, उसने अपनी नजरें घुमाई तो माँ बाप पर पड़ी, जो अब तक वहाँ एकत्रित भीड का हिस्सा बन चुके थे। "ठीक है हम तुम्हारे साथ चलेंगे।" उसके पिता ने तुरन्त स्थिति को भाँपते हुए उत्तर दिया।

अगले दिन से योगेश का नए शहर और नए जीवन का सफर शुरू हो चुका था। अनजाने भय और जिज्ञासा के मिले–जुले भाव से वो अपने पिता के साथ बेहतर भविष्य की कामना के साथ मुम्बई पहुँच गया। दो गानों की रिकार्डिंग पूरी होने से पहले ही नया काम भी मिल गया और सिलसिला चल निकला। एक साल में दस लाख रुपए की आय के साथ वह अब काफी समझदार भी हो चुका था। रहने के लिए एक कमरे के फ्लैट का किराया देने में भी किसी प्रकार की अड़चन नहीं थी। चार साल निरन्तर काम मिलते रहने से अब योगेश अपने परिवार सहित मुम्बई में रहने लगा।

अपने गले और शरीर को लचीला बनाए रखने के लिए वह नियमित रूप से रियाज करना नहीं भूलता। संगीत के साथ निरन्तर अभ्यास से उसने योग में भी महारत हासिल कर ली थी। संगीत–योग नाम से उसने अपना एक यूट्यूब चैनल भी शुरू कर दिया जिसमें वह योग को संगीत के साथ करने के सरल अभ्यास सिखाता जो युवाओं में खासकर लोकप्रिय हो रहा था।

जून माह में विश्व योग दिवस और विश्व संगीत दिवस के उपलक्ष्य में महानगरपालिका की ओर से योगेश को सम्मानित किया गया। मात्र सोलह बरस की उम्र में यह सम्मान लेते जाते देख उसके माता–पिता के नयन गीले हो गये। अपने होनहार बेटे की प्रतिभा से बदली किस्मत की खुशी को महसूस करने का प्रयास कर रहे थे।

संदीप पांडे
अजमेर (राजस्थान)

दिमागी कसरत

यहाँ दी गई दोनों आकृतियों में 1 से 9 तक के अंक इस प्रकार भरने हैं कि निर्धारित गणितीय क्रिया करने पर वृत्त में दिये गये उत्तर प्राप्त हो सके। एक अंक का उपयोग एक बार ही करना है।

(अ)

□ + □ + □ = (14)
\+ + +
□ + □ + □ = (15)
\+ + +
□ + □ + □ = (16)
= = =
(14) (15) (16)

(ब)

□ x □ x □ = (42)
x x x
□ x □ x □ = (120)
x x x
□ x □ x □ = (72)
= = =
(28) (120) (108)

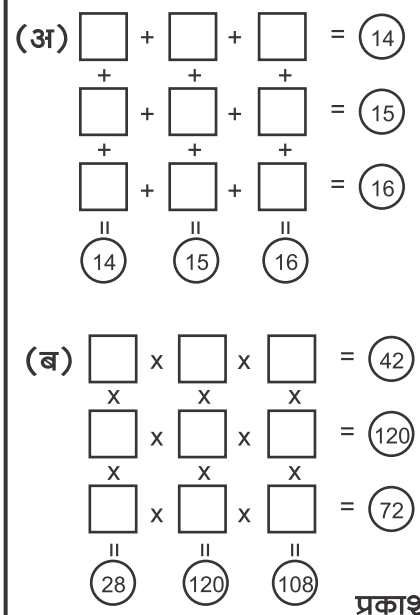

उत्तर इसी अंक में

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

	9		8				5	7
		6			1		2	
3				7				
5			9		6		3	8
	3			1				
2		8				5	1	
6				9				3
	1						9	
		7	6		5	8		9

उत्तर इसी अंक में

व्हाट्सएप कहानी

एक नौजवान चीता पहली बार शिकार करने निकला। अभी वह कुछ ही कदम आगे बढ़ा था कि एक लकड़बग्घा उसे रोकते हुए बोला– "अरे छोटू, कहाँ जा रहे हो तुम?" "मैं तो आज पहली बार अकेला शिकार करने निकला हूँ।" चीता रोमांचित होते हुए बोला। "हा–हा–हा–, लकड़बग्घा हँसा।" ''अभी तो तुम्हारे खेलने–कूदने के दिन हैं, तुम इतने छोटे हो, तुम्हें शिकार करने का कोई अनुभव भी नहीं है, तुम क्या शिकार करोगे?" लकड़बग्घे की बात सुनकर चीता उदास हो गया। दिन भर शिकार के लिए वह बेमन इधर–उधर घूमता रहा, कुछ एक प्रयास भी किये पर सफलता नहीं मिली और उसे भूखे पेट ही घर लौटना पड़ा।

अगली सुबह वह एक बार फिर शिकार के लिए निकला। कुछ दूर जाने पर उसे एक बूढ़े बन्दर ने देखा और पूछा– "कहाँ जा रहे हो बेटा?" "बन्दर मामा, मैं शिकार पर जा रहा हूँ।" –चीता बोला। ''बहुत अच्छे।" बन्दर बोला– "तुम्हारी ताकत और गति के कारण तुम एक बेहद कुशल शिकारी बन सकते हो। जाओ तुम्हें जल्द ही सफलता मिलेगी।" यह सुन चीता उत्साह से भर गया और कुछ ही समय में उसने एक छोटे हिरन का शिकार कर लिया।

मित्रो, हमारी जिन्दगी में "शब्द" बहुत मायने रखते हैं। दोनों ही दिन चीता तो वही था, उसमें वही स्फूर्ति और वही ताकत थी पर जिस दिन उसे डिस्करेज किया गया वह असफल हो गया और जिस दिन एनकरेज किया गया वह सफल हो गया।

बूझो तो जानें

1

हम दो सगी बहनें
हमारी नजर के क्या कहने,
सही उत्तर बता दिया तो
खुशी के आँसू लगे बहनें।

5

चरैवेति चरैवेति मंत्र हमारा
तन मन्दिर के हम पहिए,
कहिए कहाँ जाइएगा
कदम बढ़ाकर कुछ कहिए।

2

हमें उमेथा जाता है
अकसर स्कूल में,
काम हमारा दूजा है पर
होती है ऐसी भूल है।

3

बातों बातों में कट जाती
ना जाने कैसे जुड़ जाती,
ऊँची रखो तो अच्छा है,
वरना इज्जत घट जाती।

4

जगन्नाथ कहलाते हैं पर
हम हैं नहीं भगवान,
इनकी बदौलत काम होते
कर देते मुश्किल आसान।

इंद्रजीत कौशिक, बीकानेर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

किताबों का गाँव भिलार

हर घर में लाइब्रेरी

दोस्तो! अगर हम आपको कहें कि एक गाँव ऐसा भी है जहाँ हर गली–चौराहे पर आपको किताबें ही किताबें मिलेंगी तो आप हैरान हो जाएँगे न! लेकिन यह पूरी तरह सच है। महाराष्ट्र के पंचगनी से करीब 8 किलोमीटर दूर सतारा जिले में स्थित भिलार एक ऐसा ही गाँव है। यह देशभर में अपने वाशिंदों के पुस्तक प्रेम के लिए चर्चित हो चुका है। इस गाँव को पुस्तक ग्राम या बुक विलेज भी कहा जाता है।

विदेश से मिली प्रेरणा

इसे यूके (UK) के वेल्स शहर स्थित "हे ऑन वे" के तर्ज पर निर्मित किया गया है। "हे ऑन वे" सांस्कृतिक त्योहार और अपने विशाल पुस्तकालय के कारण अधिक है। महाराष्ट्र में इस थीम को लागू करने में लगभग 2 वर्ष का वक्त लगा। तत्कालीन मुख्यमन्त्री ने इसका उद्घाटन किया। योजना को अमलीजामा पहनाने के लिए गाँव में किताबें पढ़ने के लिए 25 जगहों को चिह्नित किया गया जिनकी दीवारों को 75 कलाकारों ने आकर्षक कारीगरी से सजाया।

उपलब्ध हुईं हजारों किताबें

विभिन्न पुस्तकालयों में साहित्य, कविता, धर्म, महिला, बच्चों, इतिहास, पर्यावरण, लोक साहित्य, जीवन और आत्मकथाओं सम्बन्धी सभी तरह की किताबें उपलब्ध करवाने का खाका तैयार हुआ। योजना के बाद महाराष्ट्र सरकार की तरफ से गाँव में

15000 मराठी किताबों को यहाँ रखा गया। गाँव की झोपड़ी, मन्दिर, स्कूल और रेस्ट हाउस सभी जगहों को किताबों की एक लाइब्रेरी का रूप दिया गया जहाँ कोई भी किताब पढ़ सकता है।

भाषा और संस्कृति को प्रोत्साहन

सरकार का इस गाँव को पुस्तक ग्राम बनाने के पीछे मराठी भाषा और संस्कृति को प्रोत्साहन देने का इरादा था। यहाँ आप अपनी मनपसन्द बुक्स को आसानी से ढूँढ़ सकते हैं और पढ़ सकते हैं। आने वाले वक्त में यहाँ इंग्लिश एवं हिन्दी भाषा में भी किताबें होंगी। यहाँ कोई भी व्यक्ति मुफ्त में किताब पढ़ सकता है।

आकर्षित करती हैं दीवारें

किताबों एवं फर्निश्ड पुस्तकालय के अतिरिक्त यहाँ ऐसी बहुत सी आकर्षक चीजें हैं जिन्हें देखकर लोग मोहित हो जाते हैं। यहाँ की पुस्तकालय की दीवारें लोगों को सहज ही अपनी तरफ अधिक आकर्षित करती है। जिसमें साहित्य, कला, लोकगीत, कविताएँ, इतिहास एवं धर्म से जुड़ी बातों को बड़ी खूबसूरती से उकेरा गया है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प. बंगाल)

ममता की छाँव में

गधेलु ने किया धूप से बचाव

गर्मी के दिन थे। सूरज के आते ही तुरन्त गर्मी लगना शुरू हो जाती थी। दोपहर का समय था। गधे के छोटे बच्चे गधेलु को बहुत गर्मी महसूस होने लगी। धूप से पीठ जलने लगी। लग रहा था जैसे कानों से भाप निकाल रही हो। उसका गला सूख गया। जुबान सूख गयी। आँखों में जलन होने लगी। पूँछ तप–तपकर निढाल हो गयी। फिर गधेलु ने कूदी मारी।... पैर झटकाये।... पेड़ को पकड़कर दो पैरों पर खड़ा हो गया। कान घुमाए। लेकिन धूप तो कम नहीं हुई। गधेलु ने मुँह खोला और जोर से हेंफुर्रेखिहों किया। फिर भी धूप कम नहीं हुई। गधेलु को समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करूँ जिससे यह धूप कम हो जाए?

यह छोटा बच्चू, दौड़कर मम्मी के पास गया। अपने बच्चू को देखते ही मम्मी सब समझ गयी। मम्मी ने गधेलु की पीठ चाट ली। प्यार से उसके माथे पर अपनी जीभ फेरी। गधेलु बच्चे को बहुत अच्छा लगा। उसने भी मम्मी का पेट चाट लिया। मम्मी ने कहा– "अरे बच्चा गधेलु, धूप चढ़ने के बाद धूप में नहीं खेलते। पेड़ों की छाया में बैठना चाहिए। छाया में ही खेलना चाहिए। खेल–खेलकर थक जाने के बाद छाया में ही शान्ति से आराम करना चाहिए।"

गधेलु कूदी लगाते हुए और प्यार से मम्मी के पेट पर अपना सिर रगड़ते हुए बोला– "लेकिन मम्मी–मम्मी, उन पेड़ों की छाया में तो इनसानों के बच्चे हैं। वे हमें कभी–भी खेल में शामिल नहीं करते

और अगर हम पेड़ों के नीचे खेलने गये, तो वे बच्चे हमें धूप में भगा देते हैं। हम छाया में नहीं जाते, तब भी हमारे साथ वे शैतानी करते हैं। हम चुप खड़े रहें, तब भी वे हमें यों ही बार–बार परेशान करते रहते हैं। हम छोटे–छोटे गधेलुओं को, ये इनसानों के बच्चे छाया में आने ही नहीं देते।

''मम्मी, मुझे बताओ। छाया क्या सिर्फ इनसानों के बच्चों के लिए ही होती है? और मेरे जैसे छोटे गधेलु को क्या हमेशा धूप में ही रहना होगा?" मम्मी प्यार से गधेलु को थपथपाते हुए बोली– "नहीं मेरे बच्चे! छाया तो तुम सभी बच्चों के लिए होती है। क्या इनसान और क्या गधे, छाया के लिए सभी एक समान। जाओ, तुम उस दूर की दूसरी छाया में जाकर खेलो।"

मम्मी के बदन पर जोर से अपनी पीठ खुजाते हुए गधेलु ने कहा– "मम्मी इस गन्दी धूप की वजह से मेरी पीठ में बहुत जलन हो रही है। कानों से भाप निकल रही है। सिर तप गया है और पूँछ तो बेहद निढाल हो गयी है। ऐसा लगता है उस दूर की छाया में जाने से अच्छा है ठंडे–ठंडे, लिजलिजे कीचड़ में मस्ती से लेटा रहूँ। कीचड़ में लेटूँ। खेलते हुए कीचड़ में लपेटा जाऊँ। ठंडी–ठंडी, नरम–मुलायम कीचड़ की जैकेट पहनूँ।"

मम्मी खुशी से चिल्लायी– "वाह वा, वाह वा! क्या बात है! मेरा गधेलु है ही बड़ा होशियार! एकदम होशियार!" "मम्मी मम्मी, और हम अगर कीचड़ में खेलने जाएँगे ना, तो वह इनसानों के बच्चे वहाँ नहीं आएँगे। मुझे परेशान नहीं करेंगे। मेरे साथ शैतानी भी नहीं करेंगे। मेरे बदन को तो छूएँगे भी नहीं। बताओ तो, ऐसा क्यों बताओ–बताओ, जल्दी बताओ?" पूँछ हवा में उछालते हुए गधेलु ने मम्मी से इतराकर पूछा। कान घुमाते हुए मम्मी ने सोचा। मुँह टेढ़ा करके दाँतों पर जीभ फेरते हुए उसने सोचा। चौथे पैर से दूसरे पैर को खुजाते हुए उसने फिर से सोचा। फिर झल्लाकर पिछले पैरों से दो कूदी लगायी। आँखें बड़ी करते हुए पूँछ उछालकर मम्मी बोली– "नहीं मालूम मुझे। मुझे नहीं कुछ सूझ रहा। सचमुच कुछ पता नहीं चल रहा। अब तू ही बता ना मेरे गधेलु।" इतने आसान सवाल का जवाब मम्मी को भी पता नहीं है, यह सुनकर गधेलु को बड़ा अचरज हुआ। गधेलु को बहुत खुशी हुई! उसने खुशी–खुशी चार पैरों पर टेढ़ी–मेढ़ी कूदी मारी। कान सख्त करते हुए इधर–उधर, यहाँ–वहाँ पूँछ घुमायी। मस्ती और खुशी में जमीन पर लेट गया।

मम्मी की गर्दन, पेट को टक्कर देते हुए गधेलु बोला– "अरी मम्मी, वह इनसानों के बच्चे पता नहीं कैसे–कैसे कपड़े पहनते हैं? और बदन पर कहीं पर भी कपड़े पहनते हैं। उन कपड़ों के तो कैसे बेकार से फैशन भी करते हैं।" आँखें बड़ी करके और पूँछ सख्त बनाकर मम्मी गधेलु की बातें ध्यान लगाकर सुनने लगी। "अरी, वह इनसानों के बच्चे हाथ पर, पैरों पर, पेट पर और कुछ तो सिर पर भी कपड़े पहनते हैं। कुछ पैरों पर आधे कपड़े पहनते हैं तो कुछ हाथों पर। यह सब कपड़े एक ही रंग के नहीं होते। हर एक के रंगबिरंगे अलग–अलग कपड़े, नरम–मुलायम, महीन–झीने कपड़े। हर किसी की फैशन अलग होती है मम्मी! नरम–मुलायम कीचड़ में लेटने के बाद उनके वह बढ़िया, सुन्दर कपड़े कीचड़ से भर जाएँगे ना? उनके कपड़े कीचड़ से सने हो जायेंगे ना? गन्दे हो जाएँगे ना? पर हमें कैसा डर? हम तो सारे ही नंगू–पंगू! कीचड़ में जाकर मस्त रंगेंगे! और उन्हें चिन्ता कपड़ों की। मुझे चिन्ता धूप की।

अपनी पूँछ से आड़ा–तिरछा लप्पड़ मारते हुए मम्मी प्यार से बोली– "अरे बदमाश! जा फिर, वहीं जाकर लेट जा और खींखौ अरे गधेलु याद रहे, कीचड़ बदन पर सूख जाए तो।" "तेरे नंगू–पंगू गधेलु को धूप की तकलीफ होगी ही नहीं। फुर्रे खींहों।" कहकर खुशी से ढेंचू–ढेंचू करते हुए गधेलु चारों पैरों से उछलकर कूदने लगा। ठंडे, लिजलिजे, नरम, मुलायम कीचड़ में मस्त लेटने के लिए गधेलु सरपट भाग गया। दूर जाते हुए गधेलु की ओर देखकर गधी खुशी से बोली– "खींहों सचमुच छाया में खेलने वाले उन इनसानों के बच्चों से ज्यादा उस कीचड़ में लेटे–लेटे फैल जाने वाला मेरा यह बच्चा ही बहुत ज़्यादा होशियार है।"

मराठी मूल लेखक :
राजीव तांबे, पूणे (महाराष्ट्र)
अनुवाद : **डॉ. विशाखा ठाकूर, ठाणे (महाराष्ट्र)**

आओ पढ़ें : नई किताबें

चित्र और पहेलियों के संयोग से रचनाकार ने एक नया शब्द गढ़ा– चित्रेलियाँ। नाम के अनुरूप पुस्तक में 88 पहेलियाँ है, जो विविध विषयानुसार 9 अध्यायों में वर्गीकृत है। सभी पहेलियाँ चार पंक्तियों के सरस व सरल काव्यरूप में हैं। उत्तर के स्थान पर सम्भावित चित्र दिये गये हैं जिनकी मदद से उत्तर की खोज करना है। इन चित्रों में रंग भी भरे जा सकते हैं। यह एक नवाचार है जो बाल जगत में निश्चित ही लोकप्रिय होगा। पुस्तक का नाम, चित्र व मुद्रण आकर्षित करता है। सभी पहेलियाँ रोचक व मजेदार है।

पुस्तक का नाम : चित्रेलियाँ **लेखक :** आशा शर्मा **प्रकाशक :** विकास प्रकाशन, बीकानेर
मूल्य : 120 रुपये **पृष्ठ :** 52 **संस्करण :** 2023

दोनों पुस्तकें शीर्षक के अनुरूप बालकों और किशोरों को जीवन मूल्यों के प्रति सचेत करती है। उनमें जोश व उत्साह भरती है। उन्हें जीवन संघर्ष के प्रति साहसी बनाती है। उत्तम भाव व पूर्ण शिल्प द्वारा रचित बालगीतों की ये पुस्तकें शिक्षाप्रद एवं प्रेरक हैं। अधिकतर गीत बालमन को स्पर्श करने वाले हैं। सुन्दर आवरण में सजी ये पुस्तकें आकर्षित करती हैं।

पुस्तक का नाम : ढोल बजाता चूहा आया एवं नई राह है हमें बनानी **लेखक :** श्यामपलट पांडेय
पृष्ठ : 146 **संस्करण :** 2022 **मूल्य :** 150 रुपये **प्रकाशक :** अविचल प्रकाशन, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

बताओ तो जानें

ध्यान से देखकर बताओ कि आकाश में उड़ने वाले इस पक्षी की सही परछाई कौन सी है?

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

आत्मरक्षा से जुड़ा खेल जूडो

यह खेल सिर्फ जापानियों का नहीं है, और अन्य देश भी इसे खेल और इसमें जीत सकते हैं। 1988 के ओलिम्पिक में प्रदर्शन खेल के रूप में जूडो में महिलाओं ने भाग लिया। 1992 से इसे एक खेल के रूप में ओलिम्पिक में मान्यता दे दी गई।

जूडो एक आत्म रक्षा के लिए विकसित की गई कला है, जो धीरे–धीरे खेल का रूप लेता गया और आज पूरी दुनिया में लोकप्रिय है। इसे मार्शल आर्ट की श्रेणी में रखा जाता है। जूडो का जनक देश जापान है। जापान के एक शिक्षक कानो जिगोरो को इस खेल का शुरू करने का श्रेय जाता है। जिगोरो प्राचीन जापानी मार्शल आर्ट जुजुत्सु सीखना चाहते थे। पर तब इस खेल का नामलेवा तक जापान में नहीं बचे थे। जो इसे युद्ध कला को जानते थे, वह इसके बुरे भविष्य को देखकर अन्य धंधों में लग गए थे या मार्शल आर्ट के स्कूल खोल चुके थे। बहुत जगह भटकने पर अन्त में जिगारो को फाकूदा हैचिनोसुके नामक शिक्षक जुजुत्सु की शिक्षा देने को तैयार हो गए।

1882 में कानो जिगारो ने अपने मार्शल आर्ट स्कूल की स्थापना की। समय के साथ यह युद्ध कला भी खेल के एक रूप में ढल गया। ओलम्पिक में जूडो : 1932 के लांस एंजेलस ओलम्पिक में पहली बार जूडो को देखा गया। जिगारो ने अपने 200 छात्रों के साथ वहाँ जूडो कला का प्रदर्शन किया। उनकी मेहनत रंग लाई और 1964 के टोक्यो ओलम्पिक में इसे पहली बार शामिल किया गया। पर सारी दुनिया चकित रह गई जब फाइनल में इस खेल के जनक देश जापान के खिलाड़ी को हालैंड के एंटोन जीसिंक ने हराकर तहलका मचा दिया। पहली बार लोगों को लगा कि

इस खेल के लिए यूनिफॉर्म निर्धारित है। प्रतिस्पर्धी आम तौर सफेद कपड़े पहनते हैं जिसे जूडोगी कहा जाता है। इस यूनिफॉर्म को 1907 में कानो नामक व्यक्ति ने तैयार किया था। मुख्य स्पर्धा में विपक्षी खिलाड़ी अलग रंग, मुख्यतः नीले रंग की वर्दी पहनते हैं ताकि दोनों खिलाड़ियों में फर्क करना आसान हो सके। जूडो का संचालन इंटरनेशनल जुडो फेडरेशन करता है। इसकी स्थापना 1951 में हुई। यही संस्था अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों का आयोजन करती है और इसी की देखरेख में विश्व चैम्पियनशिप का भी आयोजन होता है।

विश्व चैम्पियनशिप : ओलम्पिक से पहले जूडो की विश्व चैम्पियनशिप शुरू हो गई थी। सबसे पहले 1956 में जापान के टोक्यो शहर में इसका आयोजन हुआ। तब 21 देशों के 31 खिलाड़ियों ने मुकाबले में भाग लिया था। उस समय खिलाड़ियों के उनके वजन के हिसाब से अलग–अलग नहीं बाँटा गया था और जापान के शोकिची नात्सुई पहले विश्व चैम्पियन बने थे। 1980 में महिलाओं की चैंम्पियनशिप शुरू हुई और इसका आयोजन अमेरिका के न्यूयार्क में हुआ। 1986 तक पुरुषों और महिलाओं की चैम्पियनशिप अलग–अलग होती रही पर 1987 में पहली बार दोनों का आयोजन एक साथ किया गया। इसका आयोजन जर्मनी में हुआ। तब 65 देशों ने इसमें भाग लिया था। आमतौर पर हर दो वर्ष बाद इसका आयोजन होता है।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

मिनी का खजाना

विभु अपने मम्मी–पापा व छोटी बहन मिनी के साथ एक शहर में रहता था। उसके पापा ऑफिस के काम से पन्द्रह दिनों के लिए अमेरिका गए थे। एक दिन उनका फोन आया। फोन विभु ने ही उठाया। "बेटा, अपनी मम्मी को फोन देना।" पापा ने कहा। "वह तो मिनी को नहला रही हैं।" विभु ने बताया। "तो तुम ध्यान से मेरी बात सुनो, कल तुम्हारे दादाजी गाँव से कुछ दिनों के लिए हमारे पास रहने आ रहे हैं।" "दादाजी आ रहे हैं? याहू!" विभु खुशी से उछलता हुआ बोला।

"देखो विभु, अब तुम पूरे दस साल के हो गए हो। दादाजी को परेशान मत करना। तुम तो जानते हो वे अपनी परेशानी किसी को नहीं बताते। तुम्हारी मम्मी मिनी के साथ व्यस्त रहती हैं। वह तुम्हारे साथ तुम्हारे कमरे में ही रहेंगे। तुम्हें उनकी हर छोटी से छोटी जरूरत का ध्यान रखना होगा।" "आप चिन्ता मत करो पापा, वैसे भी मेरी छुट्टियाँ चल रही है, मैं दादाजी को पार्क में घुमाने भी ले जाऊँगा और उनका पूरा ध्यान भी रखूँगा।" "ठीक है बेटा उनके आने के बारे में मम्मी को याद रख के बता देना।" कहकर पापा ने फोन काट दिया। दादाजी के आने पर विभु बहुत खुश हुआ। अपनी अलमारी में कुछ जगह खाली करके उसने उनका सामान लगा दिया। अब वह उनके साथ खेलता, पढ़ता, कहानी सुनता। कभी–कभी तो उसके दोस्त भी दादाजी से कहानी सुनने आते।

एक दिन दादाजी कुछ परेशान से लग रहे थे। उस दिन उन्होंने खाना भी नहीं खाया। विभु की मम्मी ने कई बार पूछा– "पापा यह सब्जी पसन्द न हो तो कुछ और बना दूँ? मसाले कम या ज्यादा हो तो दोबारा बना दूँ?" पर दादाजी ने मना कर दिया। "खाना नहीं खाया तो थोड़े फल काटकर ला दूँ।" मम्मी ने पूछा तो दादाजी ने उसको भी मना कर दिया। फिर मम्मी मैंगोशेक बनाकर लाईं वह दादाजी ने पी लिया। शाम को मम्मी ने पूछा– "पापा आप क्या

खाना पसन्द करेंगे, वही बना दूँ।" "नहीं बेटा, मैं खाना नहीं खा पाऊँगा।" दादाजी अलमारी में कुछ खोजते हुए बोले। "आपकी तबियत तो ठीक है?" मम्मी ने पूछा। "हाँ मैं बिलकुल ठीक हूँ, तुम परेशान न हो।" रात को भी दादाजी ने खाना नहीं खाया, केवल दूध लिया। विभु और मम्मी परेशान थे। "पता नहीं तुम्हारे दादाजी खाना क्यों नहीं खा रहे।" मम्मी बोली।

"मैंने भी कई बार पूछा पर कुछ बताते ही नहीं, बस मेरी मेज पर और अलमारी में कुछ खोज रहे हैं।" विभु ने बताया। "यदि कल भी इन्होंने खाना नहीं खाया तो मैं इन्हें डॉक्टर के पास लेकर जाऊँगी, शायद हवा पानी बदलने से भूख नहीं लग रही हो।" अगले दिन विभु अपनी मेज पर कुछ खोजता हुआ बोला– "मम्मी आपने मेरे कलर्स देखें?" "वहीं कहीं होंगे, मैंने नहीं देखे।" मम्मी मिनी को दूध पिलाती हुई बोली। "मुझे अच्छी तरह याद है रात को अलमारी से निकालकर मेज पर रखे थे पर अब नहीं है।" विभु बोला। "तो फिर मिनी के खजाने में देखो, वहीं होंगे।" मम्मी ने हँसते हुए कहा। "हाँ! मैं तो भूल ही गया।" कहकर विभु बालकनी की ओर भागा।

कुछ ही पल बाद विभु खुशी से चिल्लाता हुआ आया। "मम्मी पता चल गया दादाजी खाना क्यों नहीं खा रहे! उन्हें डॉक्टर के पास ले जाने की जरूरत नहीं है।" "ऐसा क्या हो गया?" मम्मी हैरानी से बोली। "उनके खाना न खाने की वजह मिनी के खजाने में मिल गई है।" विभु ने बताया।

मम्मी अब भी हैरान थी, तभी विभु एक हाथ में अपने कलर्स का डिब्बा दूसरे में दादाजी का डेंचर (नकली दाँतों का सेट) लेकर आया। "देखो, यह मिनी के खजाने में था।" "ओह! तो यह बात थी! इसलिए दादाजी दूध पी रहे थे पर खाना और फल नहीं खा पा रहे थे। जाओ, जल्दी जाकर इसे दादाजी को दे दो। कल से उन्होंने खाना नहीं खाया है, मैं उनके लिए अच्छा सा खाना बनाती हूँ।" "दादाजी!" चिल्लाता हुआ विभु दादाजी के पास पहुँचा। "यह लो आपके नकली दाँत। तो आप कल पूरा दिन इनको खोज रहे थे।" "यह तुम्हें कहाँ मिले?" दादाजी खुश होते हुए बोले। "मिनी के खजाने में।" "मिनी का खज़ाना? यह क्या है।" दादाजी हैरान थे।

"मिनी अभी 2 साल की है पर मुझे देखकर उसे भी बस्ता लेकर स्कूल जाने का मन करता है। उसने मेरा पुराना बस्ता ले रखा है। वह घर में से सामान उठा–उठाकर उसमें भर लेती है और बालकनी में रख देती है। घर में जो भी चीज खोजो, वहीं मिलती है, हमने उसका नाम मिनी का खजाना रखा हुआ है।" यह सुनकर दादाजी भी हँसे बिना न रह सके। "दादाजी अब आप इसे किसी ऊँची जगह पर रखिएगा जिससे मिनी वहाँ तक न पहुँच सके और हाँ, आज आपको डबल खाना–खाना पड़ेगा क्योंकि कल आपने नहीं खाया था।" यह सुनकर दादाजी जोर से हँस पड़े।

वन्दना गुप्ता
दिल्ली

याराना

दो बच्चों को हँसते देखा
इनको खूब मचलते देखा
न थी कोई पीड़ा मन में
बस आपस में मिलते देखा...।

दोनों के चेहरे की खुशियाँ
हँसी ठिठोली की वो बतियाँ
दोनों के उस याराना को
सच में आज निखरते देखा...।

दोनों की मस्तानी संगत
जीवन में रंगत ही रंगत
न कोई मज़हबी दीवारें
रिश्ते को बस खिलते देखा...।

बचपन यही हमें सिखलाएँ
रिश्तों में माधुर्य बनाएँ
सच में आज इन्हीं बच्चों में
रिश्ते को सम्मानित देखा...।

विजय कनौजिया'
अम्बेडकर नगर (उत्तर प्रदेश)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. राजू की परेशानी क्या थी ? वह कैसे दूर हुई ?
2. विश्व संगीत दिवस कब मनाया जाता है ?
3. गधेलु ने गर्मी से बचने के लिए क्या किया ?
4. देश के पहले आई.ए.एस. अधिकारी कौन बने ?
5. मन के तीन कार्य कौन से हैं ?
6. अब्दुल हसन अब्दुल निसार ने कौन सी प्रतियोगिता जीती ?
7. दादा जी ने बच्चों से क्या वादा किया था ?
8. किस गाँव को किताबों का गाँव कहते हैं?
9. मिजोरम को सबसे खुशहाल राज्य क्यों माना गया ?
10. 'सोच को बदलो' नाटिका का क्या संदेश है ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) बाजरा–राजस्थान (ब) नारियल–केरल (स) प्याज–महाराष्ट्र (द) कपास–गुजरात (2) उत्तर प्रदेश (3) 1967–68 (4) कृष्णा व गोदावरी नदी (5) दूध (6) नासिक (महाराष्ट्र) (7) गन्ना (8) गेहूँ (9) सब्जियों की खेती (10) जम्मू–कश्मीर

अन्तर ढूँढ़िए

(1) फूल का रंग अलग (2) पक्षी का आकार बड़ा (3) लड़के की एक अँगुली गायब (4) सूरज का रंग अलग (5) लड़के की हाफपेंट पर डॉट अतिरिक्त (6) आकाश में बादल गायब (7) साँप अतिरिक्त (8) बॉल का आकार बड़ा

दिमागी कसरत

(अ)

9	+ 4	+ 1	= 14
+	+	+	
3	+ 5	+ 7	= 15
+	+	+	
2	+ 6	+ 8	= 16
=	=	=	
14	15	16	

(ब)

7	x 3	x 2	= 42
x	x	x	
4	x 5	x 6	= 120
x	x	x	
1	x 8	x 9	= 72
=	=	=	
28	120	108	

बताओ तो जानें

उत्तर – स

बूझो तो जानें

(1) आँखें (2) कान (3) नाक (4) हाथ (5) पाँव

वर्ग पहेली

1 म	2 ज	3 दू	र	दि	4 व	स	
5 श	ब	री			क्त		6 अ
7 हू	र		8 श	क		9 दा	म
10 र	द	11 न			12 नि		र
	13 स्त	व	14 न		15 रा	क्ष	स
16 स			17 म	18 ना	ली		
19 पा	20 व	21 स		द		22 ढा	23 बा
24 ट	ह	ल	ना		25 न	क	ल

सुडोकू

1	9	4	8	6	2	3	5	7
8	7	6	3	5	1	9	2	4
3	5	2	4	7	9	1	8	6
5	4	1	9	2	6	7	3	8
7	3	9	5	1	8	4	6	2
2	6	8	7	4	3	5	1	9
6	8	5	1	9	4	2	7	3
4	1	3	2	8	7	6	9	5
9	2	7	6	3	5	8	4	9

स्नेहा चौखड़ा, कक्षा 12, थाने (महाराष्ट्र)

गुरु

गुरु है जीवन का आधार
गुरु पर है सबका अधिकार,
गुरु का ही करो गुणगान,
गुरु में ही ढूँढ़ो भगवान ।।

गुरु ही है किस्मत का द्वार,
गुरु होते ज्ञान का भंडार,
गुरु समझाए जीवन का अर्थ।।

गुरु की शिक्षा से ही तो
मिलेगा सदा हमें ईमान,
गुरु ही है वो रास्ता,
जिस रास्ते पर है मान सम्मान।।

यशोदा कुमारी मीणा
कक्षा 9, अमरपुरा (राज.)

कीर्ति गोयल, कक्षा 6, सिलीगुड़ी

आशीष मीणा, कक्षा 7, अमरपुरा उदयपुर

आयशा लोहिया, कक्षा 6, राजसमन्द

भानवी शेखावत, कक्षा 4, बीकानेर

आरोही माहेश्वरी, कक्षा 4,चित्तौड़गढ़

आप भी अपनी **कलम और कूँची** का कमाल
हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या
पत्रिका के पते पर भेजें।

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस

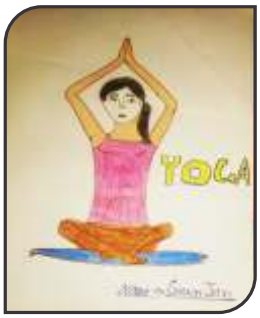

गुंजन

संध्या

परी

दर्पण

मेघा

शालू

विनीता

अर्पिता

दिलसमा

भावना

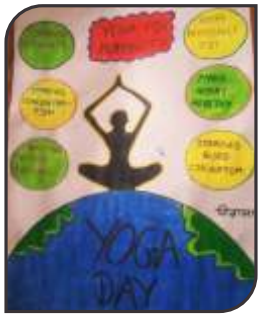

जिज्ञासा

खुशी

सुरभि

सामग्री सौजन्य :
आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- श्रीनगर, अजमेर

निशा

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

पहली बार नदी के नीचे दौड़ी मेट्रो ट्रेन

देश में पहली बार गंगा नदी के नीचे मेट्रो ट्रेन दौड़ी। कोलकाता मेट्रो ने इतिहास रचते हुए ट्रायल रन सफल कराया। मेट्रो रेलवे के जीएमपी उदयकुमार रेड्डी ने इस ट्रेन से महाकरण से हावड़ा मैदान के बीच सफर किया। भारत में यह पहली अंडरवॉटर मेट्रो परियोजना है। मेट्रो के 45 सेकंड में हुगली नदी के नीचे 520 मीटर के हिस्से को कवर करने की उम्मीद है। नदी के अन्दर बनी यह सुरंग जल स्तर से 32 मीटर नीचे है।

मिजोरम देश का सबसे खुशहाल राज्य

गुरुग्राम के मैनेजमेंट डवलपमेंट इंस्टीट्यूट के एक अध्ययन में मिजोरम को देश का सबसे खुशहाल राज्य घोषित किया गया है। वहाँ जातिविहीन समाज है। लड़कियों और लड़कों में कोई भेदभाव नहीं होता। यहाँ शिक्षक नियमित रूप से विद्यार्थियों के माता-पिता से मिलते हैं, ताकि उनकी किसी भी समस्या का समाधान किया जा सके। मिजोरम हैप्पीनेस इंडेक्स 6 मापदंडों पर आधारित है। इनमें परिवार के रिश्ते, काम से सम्बन्धित मुद्दे, धर्म, कोरोना का असर, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य शामिल हैं।

प्लास्टिक वेस्ट से बनाया देश का पहला कार्बन नेगेटिव टॉयलेट

अमृतसर के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर रंगीन इग्लू आकार की संरचना के रूप में पब्लिक टॉयलेट बनाया गया है। खास बात है कि इसे कचरे और प्लास्टिक वेस्ट से तैयार किया गया है। यह देश का पहला कार्बन निगेटिव टॉयलेट है। इस टॉयलेट को तैयार किया है जयपुर के एक निजी स्कूल में पढ़ने वाली 18 साल की रूहानी वर्मा ने।

50,907 हीरों से जड़ी अँगूठी

हरि कृष्णा एक्सपोर्ट्स और इसकी सहयोगी कंपनी एच.के.डिजाइंस ने 50,907 हीरों से यह अनूठी अँगूठी तैयार की। अँगूठी की कीमत 6.44 करोड़ रुपए आँकी गई है। अँगूठी में आठ हिस्से हैं। इनमें पंखुड़ियों की परतें, हीरे की दो डिस्क व तितली शामिल है। अँगूठी की खासियत यह है कि इसे पूरी तरह रीसाइकल मैटेरियल (गोल्ड और डायमंड) से तैयार किया गया। इसमें 460.55 ग्राम गोल्ड और 130.19 कैरेट डायमंड लगा है।

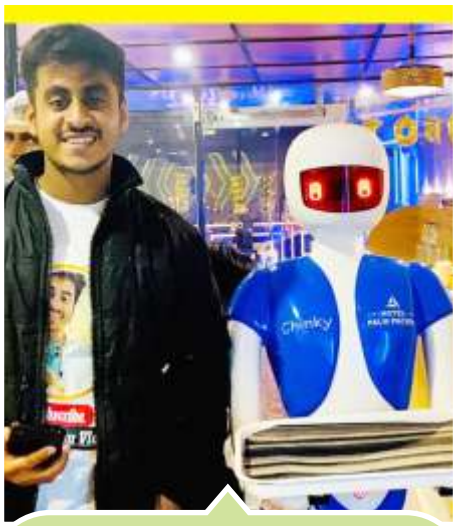

रोबोट चलाते हैं रेस्टोरेंट

कोटा के झालावाड़ रोड़ स्थित पाम पेसेफिक होटल व रेस्टोरेंट के संचालक ने विदेश से दो रोबोट प्रति रोबोट 8 लाख रुपए की दर से मँगवाए। इनके नाम चिंकी और मिंकी रखे गए हैं। लोग खासकर बच्चे रोबोट को खाना ऑर्डर करने और रोबोट के हाथों खाना खाने का लुत्फ उठा रहे हैं। रोबोट का बच्चों में इतना क्रेज है कि खाना खाने के दौरान बच्चे रोबोट के साथ अधिक वक्त बिताने के लिए बार-बार डिशेज ऑर्डर करते हैं।

देश का पहला केबल आधारित रेल ब्रिज

देश का पहला केबल आधारित रेल ब्रिज जम्मू-कश्मीर में बनकर तैयार हो गया है। यह पुल चेनाब नदी की सहायक नदी अंजी पर बना है। पुल के लिए 96 केबल लगाई गई हैं। इस पुल की लम्बाई 725 मीटर है। यह नदी के तल से 331 मीटर ऊपर है जो एफिल टावर से अधिक है। यह कटरा और रियासी खंड को जोड़ेगा। यह ब्रिज 11 महीने के रिकॉर्ड समय में तैयार किया है। इस ब्रिज में केवल एक पिल्लर का इस्तेमाल किया है। इसकी ऊँचाई 193 मीटर है।

Why should we protect the environment?

The environment is made up of the earth, water, land and atmosphere. When the matter of pollution come it is water pollution, air pollution and noise pollution come first. The major causes of pollution are establishment of factories, harvesting of aquatic animals and plants, atomic testing, the great destruction of forest etc.

Today's era is the modern. In this era the Environment protection weapon is in the hands of the students and Youth Groups only. They can create a green and clean environment planting trees as well as limiting the use of vehicles use of less firewood, preventing the use of crackers. Only they can bring public awareness to keep the mob away from playing the environment, We can be safe only by keeping the surrounding of our homes and school clean.

Ishan sharma
Class 6,Bikaner

The human race has transformed and is continuing to transform the earth drastically in his pursuit of development. Man, in his search out for comfort and luxury, has explored and destroyed the equilibrium of the nature and ecosystem.The ocean is swallowing the land as a result of global warming, and the Ice mountains keep on melting down. The sea level has rouse up to 8 inches in the last century and is expected to rise up to 36 inches in this century.

What all we have witnessed so far? The rivers and wells had dried out; the forests were transformed into cities and concrete forests; temperature and humidity were on the rise day by day. Need for change All living being on earth are living in harmony with nature. But only man, who is believed to the Protector of the earth, is doing the extreme opposite. Better late then never, now we need to change, at least a little by not doing anymore harm to the nature there are some positive signs as the expansion of Ozone hole have almost stopped over the last 2 years. We can get charged from this positive energy.

Jayshankar
Class 5, Bikaner

जन्मदिन की बधाई

04 जून

गौरवी जैन
उदयपुर

08 जून

गौरल जैन
नई दिल्ली

09 जून

रचना सोनी
उदयपुर

27 जून

देवयानी जोशी
उदयपुर

गोडावण

राजस्थान का राज्य पक्षी– गोडावण
हिन्दी नाम – गोडावण
अँग्रेजी नाम – Great Indian Bustard
वैज्ञानिक नाम – Ardeotis nigriceps

राष्ट्रीय पक्षी मोर को इसके अद्‌भुत सौंदर्य के कारण भारतीय वन्य जीव मण्डल की अनुशंसा पर जनवरी, 1963 में मोर को राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया। इसके बाद अनेक राज्यों ने अपने–अपने 'राज्य पक्षी' घोषित किये। वर्तमान में लगभग सभी राज्यों के राज्य पक्षी हैं। राज धनेश, पहाड़ी मैना, मोनाल, गोरैया और श्रीमती ह्यूम ऐसे पक्षी हैं जिन्हें दो–दो राज्यों ने तथा नीलकंठ को तीन राज्यों ने अपना राज्य पक्षी घोषित किया हुआ है। सबसे पहले राजस्थान के राज्य पक्षी गोडावण का विवरण दिया जा रहा है।

– सम्पादक

भारत के 'राज्य पक्षी'

राजस्थान का राज्य पक्षी गोडावण दुर्लभ एवं संकटग्रस्त श्रेणी का एक बड़ा एवं भारी–भरकम पक्षी है। इसे सोनचिरैया, सारंग, हुंकना आदि नामों से भी जाना जाता है। यह हमेशा जोड़े में या 5–7 के समूह में रहता है। शर्मीले स्वभाव का गोडावण मानव की निकटता से दूर भागता है। इसकी ऊँचाई 1 से 1.2 मीटर तक तथा वजन करीब 13 किलोग्राम होता है। गोडावण मोर के समान भड़कीले रंगों का तो नहीं है लेकिन इसके शरीर के उभरे हुए भाग पर भूरे और काले चिकत्ते इसकी सुन्दरता में चार–चाँद लगाते हैं। इसका निचला हिस्सा सफेद तथा सिर पर काले चिकत्ते होते हैं। अत्यन्त शर्मीले स्वभाव का होने के बावजूद गोडावण के खान–पान और रहन–सहन का अन्दाज राजसी है।

अन्य पक्षियों की तरह इसे हमेशा कुछ–न–कुछ खाते रहने की आदत नहीं है। यह सिर्फ सुबह–शाम ही भोजन करता है। दिन के समय यह झाड़ियों व पेड़ के नीचे बैठा रहता है। खाने के मामले में यह सर्वाहारी है अर्थात् यह कीड़े, चूहे, साँप, छिपकली व फसल को नुकसान पहुँचाने वाले टिड्डों के साथ ही गेहूँ, ज्वार, बाजरा, जंगली फल, बेर, कैर आदि भी बड़े चाव से खाता है। आमतौर पर यह पानी बहुत कम पीता है और भोजन में निहित पानी से ही काम चलाता है।

डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
जयपुर (राजस्थान)

बोली

चित्रकथा-

संकेत गोस्वामी, जयपुर (राज.)

– वेणु वनियाथ

Help the Ant

Can you help the ant to find the cake?

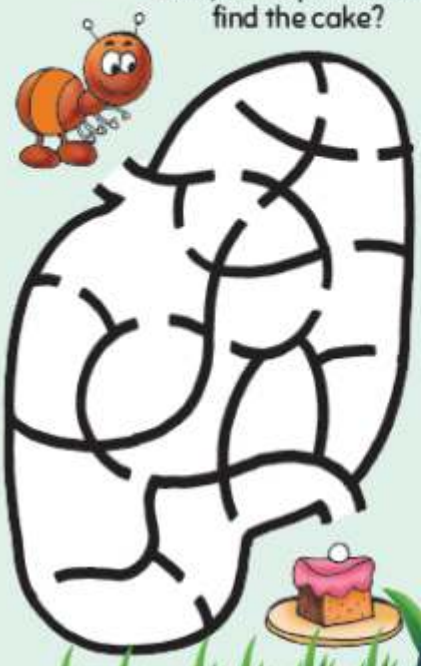

Write and Practise

cake

The cake is sweet food.

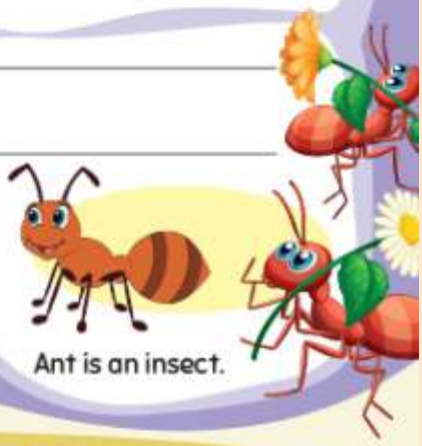

Ant is an insect.

Pictures and shadows

Match the pictures with their shadows by drawing lines.

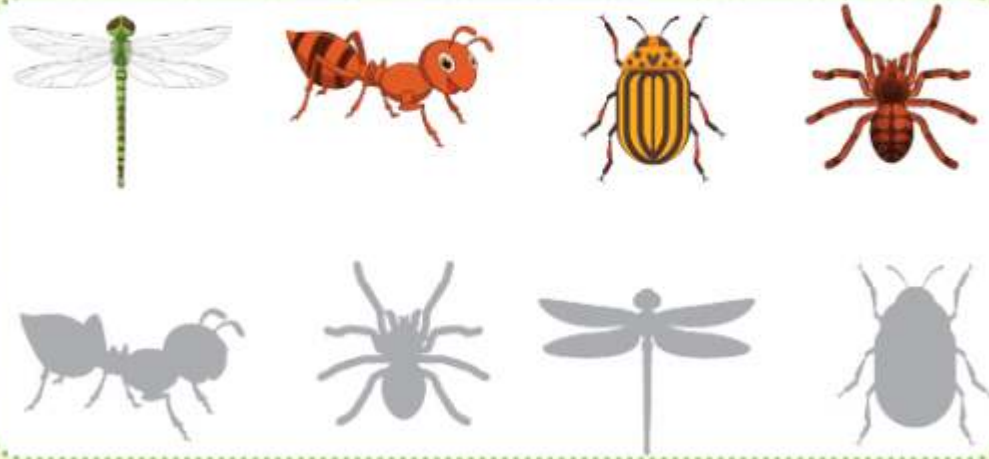

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

चिल्ड्रन'स पीस पैलेस - राजसमंद
बाल विकास का अनूठा उपक्रम

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
+91 91166 34513 head.office@anuvibha.org

जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम

"प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान" जीवन विज्ञान का प्रारंभिक एवं सरलतम चरण है। विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान का गहन प्रशिक्षण प्रदान करने एवं इसे नियमित पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने के लिए कक्षा 1 से 12 तक प्रत्येक स्तर के लिए जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम की उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध हैं।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
+91 91166 34514 jeevan.vigyan@anuvibha.org

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

ANUVRAT CREATIVITY CONTEST

प्रतियोगिताएं
लेखन | चित्रकला | गायन | भाषण

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
+91 91166 34514 acc@anuvibha.org

आपका स्कूल शैक्षिक भ्रमण पर जाने की योजना बना रहा है?
इसे मूल्यपरक, उपलब्धिपरक और यादगार बनाने के लिए प्रस्तुत है...
'बालोदय एजुटूर'

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
+91 99285 08098 balodaya@anuvibha.org

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

दो दशक से प्रकाशित लोकप्रिय
राष्ट्रीय बाल पत्रिका
मनोरंजन और ज्ञानवर्धन से भरपूर

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
+91 91166 34515 bkd@anuvibha.org

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
www.anuvibha.org

जून, 2023

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

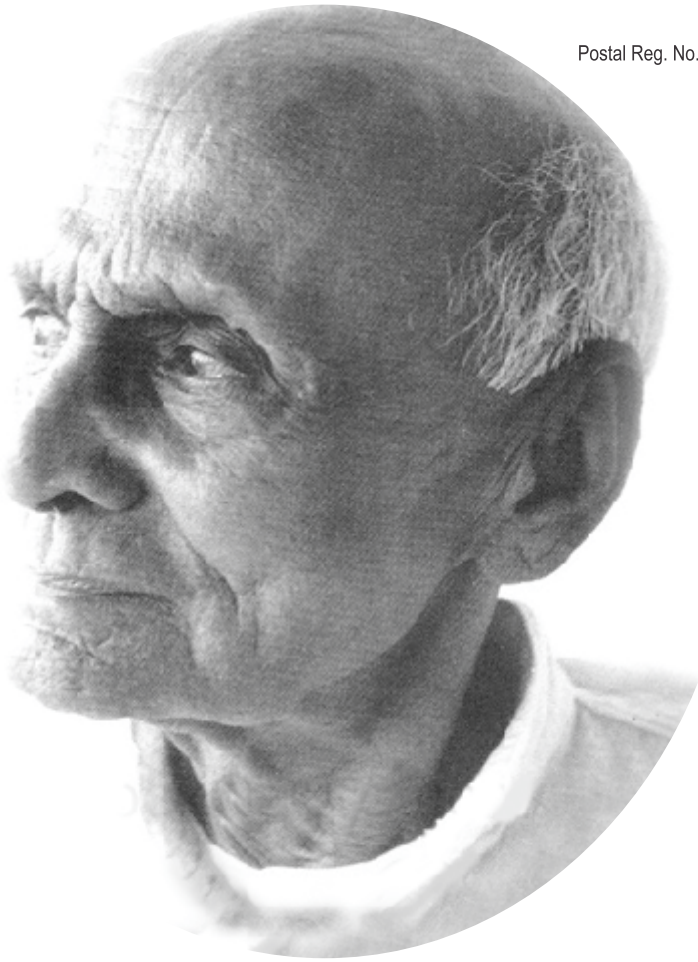

दादा धर्माधिकारी

जन्म : 18 जून, 1899 ■ निधन : 01 दिसम्बर, 1985

पूरा नाम शंकर त्रिम्बक धर्माधिकारी एक स्वतन्त्रता सेनानी, गांधीवादी चिन्तक और प्रसिद्ध लेखक थे। आपका जन्म मध्यप्रदेश के जिला बैतूल में हुआ। बिना औपचारिक शिक्षा के स्वाध्याय द्वारा विचारकों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया। वे हिन्दी, मराठी, गुजराती, बांग्ला, संस्कृत और अँग्रेजी भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे। वे गांधी सेवा संघ में सक्रिय थे। वे मध्यप्रदेश असेम्बली के सदस्य एवं संविधान परिषद् के सदस्य चुने गये। आपने आचार्य विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन में भी बढ़कर भाग लिया।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक